नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 213, नई दिल्ली, शनिवार 07 नवम्बर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र



03 ऋषि धन्वंतरि का आज जन्मदिन है !!

06 पक्षी सर्दियों की रात में कैसे जीवित रहते हैं?

08 जमशेदपुर के भाजपा नेता निर्भय सिंह अब नहीं रहे, हार्ट अटैक से निधन

दिल्ली में ई-रिक्शा : सुविधा या संकट? नियम कानून कागजों में, सड़क पर मनमानी

लास्ट-माइल कनेक्टिविटी की जरूरत से पैदा हुआ ई-रिक्शा अब जाम, सुरक्षा और कानून के पालन का सबसे बड़ा सवाल बन गया है - समस्या चालक नहीं, व्यवस्था की नाकामी है

- प्रस्तुति : संपादकीय विभाग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

मुख्य तथ्य - एक दृष्टि में

- मुद्दा: दिल्ली में ई-रिक्शा का अनियंत्रित संचालन, जाम, अवैध स्टैंड, ओवरलोडिंग, मनमाना किराया और दुर्व्यवहार की शिकायतें

- कानूनी दर्जा: ई-रिक्शा मोटर वाहन है, खिलौना या गैर-मोटर वाहन नहीं

- नियम: मोटर यान अधिनियम, 1988 की धारा 2ए के तहत ई-रिक्शा पर अधिनियम के प्रावधान लागू होते हैं

- तकनीकी सीमा: अधिकतम गति 25 किमी प्रति घंटा, मोटर शक्ति 2000 वॉट तक, चालक के अलावा अधिकतम चार यात्री और 40 किलोग्राम सामान

- नई पहल: दिल्ली सरकार का मसौदा - दिल्ली ई-रिक्शा (पंजीकरण एवं संचालन) योजना, 2026, सार्वजनिक सुझावों के लिए जारी

- संपादकीय पक्ष: हम ई-रिक्शा के खिलाफ नहीं, अनियमितता के खिलाफ हैं। गरीब चालक का रोजगार भी अधिकार है, और पैदल यात्री, साइकिल सवार, महिला, बुजुर्ग और अन्य वाहन चालक की सुरक्षा भी अधिकार है।

प्रस्तावना - जिस सुविधा ने दिल्ली को जोड़ा, वही अब दिल्ली को रोक रही है दिल्ली में मेट्रो स्टेशन से घर, बाजार से अस्पताल, स्कूल से मोहल्ले तक पहुंचने के लिए ई-रिक्शा ने वह काम किया, जो बड़ी बसें नहीं कर पाईं।

दरवाजे से दरवाजे तक सेवा, कम किराया, प्रदूषण रहित यात्रा - यह ई-रिक्शा की सच्ची उपयोगिता है लेकिन जब यही सुविधा बिना नियम, बिना रूट, बिना स्टैंड और बिना जवाबदेही के चलने लगे, तो वह सुविधा नहीं, संकट बन जाती है। पाठकों, चालकों, यात्रियों और स्थानीय निवासियों से मिली शिकायतों का सार यही है।

यह संपादकीय किसी एक चालक, किसी एक स्टैंड या किसी एक समुदाय के खिलाफ नहीं है। यह व्यवस्था से पूछा गया सवाल है - जब कानून साफ है, तो पालन क्यों नहीं हो रहा?

> संपादकीय स्पष्टीकरण: इस रिपोर्ट में जहां भी अवैध वसूली, संरक्षण या जानबूझकर जाम जैसे आरोप हैं, उन्हें हम शिकायत / कथित आरोप के रूप में दर्ज कर रहे हैं। किसी व्यक्ति या संस्था को दोषी ठहराने से पहले निष्पक्ष जांच, साक्ष्य और सुनवाई जरूरी है। यही पत्रकारिता का धर्म है।

1. जनता की शिकायतें क्या हैं? - जमीनी अनुभव पाठकों द्वारा बताई गई प्रमुख शिकायतें इस प्रकार हैं:

1. जानबूझकर जाम और चौराहों पर अवैध स्टैंड किसी भी चौराहे, मेट्रो गेट, बाजार के मुहाने और अस्पताल के बाहर ई-रिक्शा का जमावड़ा। एक लेन घेरकर खड़े रहना, सवारी के लिए आवाज लगाना, पीछे के ट्रैफिक को रोक देना।

2. तेज गति वाली सड़कों पर दौड़ना ई-रिक्शा की निर्धारित अधिकतम गति 25 किमी प्रति घंटा है, फिर भी शिकायत है कि कई चालक तेज गति वाली सड़कों, फ्लाईओवर के नीचे और मुख्य मार्गों पर दौड़ते हैं। यह खुद चालक, सवारी और अन्य वाहनों के लिए जानलेवा है।

3. बिना लाइसेंस, बिना पंजीकरण, बिना बीमा, बिना प्रदूषण प्रमाण पत्र के संचालन की शिकायत कानून के अनुसार ई-रिक्शा चलाने के लिए वैध ड्राइविंग लाइसेंस, पंजीकरण, फिटनेस, बीमा और पीएसवी बैज जरूरी है। मसौदा योजना में भी यही शर्त दोहराई गई है कि चालक के पास वैध ई-रिक्शा ड्राइविंग लाइसेंस और पीएसवी बैज होना अनिवार्य होगा। शिकायत है कि बड़ी संख्या में वाहन इन शर्तों के बिना चल रहे हैं।

4. मुंहमांगा किराया और सवारी से इनकार दिल्ली विधानसभा मेट्रो स्टेशन के मामले में भी यही शिकायत सामने आई थी - एक रूट के यात्रियों को प्राथमिकता, दूसरे रूट के यात्रियों को इनकार। यह सार्वजनिक परिवहन के मूल सिद्धांत - बिना भेदभाव सेवा - के खिलाफ है।

5. कभी भी, कहीं भी, किसी से भी टकराव / भीड़ जाना भीड़भाड़ वाली गली में विपरीत दिशा में घुसना, अचानक मोड़ना, बिना इंडिकेटर रुकना - इससे पैदल यात्रियों, दोपहिया चालकों और महिलाओं-बच्चों में भय रहता है।

2. कानून क्या कहता है? - नियम पहले से मौजूद हैं ई-रिक्शा के लिए नए कानून की जरूरत नहीं थी, पुराने कानून का पालन ही काफी था।

क. मोटर यान अधिनियम, 1988

- धारा 2ए: ई-कार्ट और ई-रिक्शा को परिभाषित किया गया। यह बैटरी संचालित तीन पहिया विशेष वाहन है, जिसकी शक्ति 4000 वॉट से अधिक नहीं होनी चाहिए। इस धारा के आने के बाद अधिनियम के प्रावधान ई-रिक्शा पर लागू होते हैं।

- धारा 39: बिना पंजीकरण किसी मोटर वाहन का सार्वजनिक स्थान पर उपयोग नहीं हो सकता।

- धारा 66: बिना परमिट परिवहन वाहन का उपयोग नहीं हो सकता।

- धारा 146: थर्ड पार्टी बीमा अनिवार्य है। बीमा न होने पर दुर्घटना में पीड़ित को मुआवजा मिलना कठिन हो जाता है।

- धारा 3, 4, 9: बिना वैध लाइसेंस वाहन चलाना अपराध है।

- धारा 207: बिना परमिट / बिना पंजीकरण वाहन को जब्त करने की शक्ति।

ख. केंद्रीय मोटर यान नियम, 1989

- नियम 2(सीबी): ई-रिक्शा में चालक के अलावा अधिकतम चार यात्री, अधिकतम 40 किलोग्राम सामान, नेट मोटर शक्ति 2000 वॉट तक और अधिकतम गति 25 किमी प्रति घंटा।

- नियम 126: मॉडल का टाइप अप्रूवल अनिवार्य।

ग. दिल्ली मोटर यान नियम, 1993 और दिल्ली ई-रिक्शा सेवा योजना दिल्ली में पहले भी ई-रिक्शा को ट्रांसपोर्ट वाहन के रूप में पंजीकृत करने और कॉन्ट्रैक्ट कैरिज परमिट देने की व्यवस्था बनाई गई थी। उसमें भी चार यात्री की सीमा, फिटनेस प्रमाण पत्र और वाहन पर मालिक का नाम-पता अंकित करने की शर्त थी।

घ. मसौदा योजना, 2026 - क्या नया प्रस्तावित है? दिल्ली सरकार ने अक्टूबर 2026 में मसौदा योजना सार्वजनिक सुझावों के लिए जारी की है। यह अभी अंतिम कानून नहीं है, प्रस्ताव है। इसमें कहा गया है:

- बिना पंजीकरण और वैध ई-रिक्शा कंप्लायंस सर्टिफिकेट (ईसीसी) के कोई ई-रिक्शा नहीं चलेगा

- ईसीसी डिजिटल होगा, दो साल के लिए वैध होगा, एक वाहन और एक चालक से जुड़ा होगा

- चालक के पास वैध लाइसेंस और पीएसवी बैज जरूरी होगा

- अधिकतम चार यात्री, चालक के बगल में सवारी नहीं, खड़े होकर यात्रा नहीं

- अधिकतम गति 25 किमी प्रति घंटा, मोटर शक्ति 2000 वॉट तक

- अधिसूचित प्रतिबंधित सड़कों पर संचालन नहीं, यातायात / पैदल यात्रियों को बाधित कर पार्किंग नहीं

- बिना पंजीकरण वाले वाहनों को तुरंत जब्त करने और नियमानुसार निपटान का प्रस्ताव

- मालिक का नाम, पता, फोन नंबर वाहन पर अंकित करना, हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट, पीछे पीली रिफ्लेक्टिव पट्टी

यह मसौदा बताता है कि सरकार भी मान रही है कि समस्या गंभीर है। लेकिन सवाल यही है - मसौदा कागज पर रहेगा या सड़क पर उतरेगा?

3. न्यायिक आदेश क्या कहते हैं? - कोर्ट पहले ही चेता चुका है दिल्ली उच्च न्यायालय ने ई-रिक्शा के मामले में बार-बार कहा है कि बिना लाइसेंस, पंजीकरण और बीमा के अनियंत्रित ई-रिक्शा को अनुमति नहीं दी जा सकती और सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दिल्ली में अनियंत्रित यातायात न हो। e4e7

एक अन्य आदेश में कोर्ट ने कहा था कि बैटरी चालित ई-रिक्शा को कानून का पालन करना होगा, वे बिना पंजीकरण, बीमा और चालकों के वैध लाइसेंस के नहीं चल सकते।

कोर्ट की टिप्पणी का सार था - कानून में जो प्रतिबंधित है, उसे अनुमति नहीं दी जा सकती। मोटर यान अधिनियम को निलंबित नहीं किया जा सकता।

इसलिए यह कहना कि ई-रिक्शा पर कोई कानून नहीं है, गलत है। कानून है, आदेश हैं, नियम हैं। कमी क्रियान्वयन की है।

4. संवैधानिक और मूल अधिकार - यह सिर्फ ट्रैफिक का मामला नहीं है

क. अनुच्छेद 19(1)(d) - भारत में कहीं भी अबाध विचरण का अधिकार जाम में फंसा नागरिक, अस्पताल जाने में देर से पहुंचा मरीज, स्कूल जाने में देर से पहुंचा बच्चा - सबका विचरण बाधित होता है।



ख. अनुच्छेद 21 - जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 21 में स्वच्छ पर्यावरण, सुरक्षित सड़क और स्वास्थ्य का अधिकार भी माना है। बिना ब्रेक-लाइट, बिना बीमा, ओवरलोडेड ई-रिक्शा में यात्रा करना जीवन के अधिकार पर सीधा खतरा है। सड़क दुर्घटना में मरने वाला सिर्फ आंकड़ा नहीं, किसी परिवार का जीवन है।

ग. अनुच्छेद 14 - समानता का अधिकार एक ही मेट्रो गेट पर एक रूट के यात्री को सेवा और दूसरे को इनकार - यह समानता के खिलाफ शिकायत है। सार्वजनिक सेवा में धर्म, क्षेत्र, भाषा या रूट के आधार पर भेदभाव नहीं हो सकता।

घ. अनुच्छेद 19(1)(g) - व्यवसाय का अधिकार, लेकिन युक्तियुक्त प्रतिबंध के साथ ई-रिक्शा चालक को भी रोजगार का अधिकार है। अनुच्छेद 19(6) के तहत राज्य जनहित, सुरक्षा और व्यवस्था के लिए युक्तियुक्त प्रतिबंध लगा सकता है। यानी लाइसेंस मांगना चालक का अधिकार छीनना नहीं, बल्कि सबके अधिकार की रक्षा है।

ङ. अनुच्छेद 47 और 48ए - राज्य का कर्तव्य पोषण, जीवन स्तर और लोक स्वास्थ्य में सुधार राज्य का कर्तव्य है। पर्यावरण की रक्षा भी राज्य का दायित्व है। ई-रिक्शा प्रदूषण कम करता है, यह उसका सकारात्मक पक्ष है। लेकिन अव्यवस्थित संचालन से ध्वनि, धूल और जाम बढ़ता है, यह नकारात्मक पक्ष है।

च. उपभोक्ता अधिकार उचित किराया, सुरक्षित यात्रा, सम्मानजनक व्यवहार - यह यात्री का उपभोक्ता अधिकार है। मनमाना किराया मांगना इस अधिकार का उल्लंघन है।

5. राजपत्रित अधिसूचना और प्रशासनिक जिम्मेदारी - कौन क्या करे?

संविधान के अनुच्छेद 239एए के तहत दिल्ली में पुलिस, लोक व्यवस्था और भूमि उपराज्यपाल के अधीन हैं, जबकि परिवहन निर्वाचित सरकार के पास है। इसलिए ई-रिक्शा का मामला सिर्फ एक विभाग का नहीं है।

दिल्ली परिवहन विभाग की जिम्मेदारी: पंजीकरण, फिटनेस, परमिट, लाइसेंस, पीएसवी बैज, रूट निर्धारण, स्टैंड निर्धारण, ईसीसी जांच।

दिल्ली यातायात पुलिस की जिम्मेदारी: जाम हटाना, अवैध पार्किंग / स्टैंड पर कार्रवाई, ओवरलोडिंग, बिना लाइसेंस, तेज गति, गलत दिशा पर चालान और जब्ती, दुर्घटना जांच।

दिल्ली सरकार / एमसीडी / डीडीए की जिम्मेदारी: मेट्रो स्टेशन, बाजार, अस्पताल के पास वैध ई-रिक्शा स्टैंड बनाना, साइन बोर्ड लगाना, किराया सूची सार्वजनिक करना, लास्ट-माइल बस सेवा बढ़ाना।

उपराज्यपाल कार्यालय की भूमिका: राजपत्रित अधिसूचना, नियमों का अनुमोदन और कानून-व्यवस्था की समीक्षा में संवैधानिक भूमिका। किसी भी अधिसूचना का अर्थ यह नहीं है कि कानून का पालन रोक दिया जाए।

अधिसूचना कानून से ऊपर नहीं हो सकती यदि कोई अधिसूचना या आदेश कानून के पालन को रोकता है, तो वह न्यायिक समीक्षा के अधीन है। यही विधि का शासन है।

6. दिल्ली की जनता मजबूर क्यों है? - मूल कारण संपादकीय का सबसे कड़वा सच यही है। जनता ई-रिक्शा पर जान हथेली पर रखकर इसलिए चलती है, क्योंकि विकल्प नहीं है।

- मेट्रो से घर तक आखिरी दो-तीन किमी के लिए नियमित, सुरक्षित, निर्धारित किराये वाली बस / शेयर सेवा नहीं है।

- कई कॉलोनियों में सड़कें संकरी हैं, बड़ी बस नहीं जा सकती, छोटी इलेक्ट्रिक बस / ग्रामीण सेवा की कमी है।

- रात में महिलाओं के लिए सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन की कमी है।

- किराया सूची, हेल्पलाइन नंबर, शिकायत नंबर सार्वजनिक स्थान पर नहीं लिखा होता।

जब सरकार दरवाजे से दरवाजे तक सार्वजनिक सवारी सेवा देने में नाकाम रहती है, तो अनियमित निजी सेवा ही विकल्प बन जाती है। फिर उसी अनियमितता को संरक्षण मिलने का आरोप लगता है।

इसलिए समाधान सिर्फ चालान नहीं है। समाधान है - नियमित सेवा + सख्त प्रवर्तन।

7. संपादकीय मांग - दस ठोस बिंदु

1. हर मेट्रो स्टेशन, बाजार, अस्पताल पर वैध ई-रिक्शा स्टैंड तय हो: सड़क पर नहीं, सड़क से हटकर चिह्नित जगह पर। स्टैंड पर किराया सूची, रूट सूची, शिकायत नंबर बड़े अक्षरों में लिखा हो।

2. किराया और रूट तय हो: मेट्रो से मोहल्ले तक का किराया तय हो। सवारी से इनकार पर तत्काल शिकायत और कार्रवाई की व्यवस्था हो।

3. दस्तावेजों की डिजिटल जांच हो: हर ई-रिक्शा पर क्यूआर कोड हो, जिसे स्कैन करते ही पंजीकरण, बीमा, फिटनेस, चालक का लाइसेंस और पीएसवी बैज दिखे। बिना क्यूआर के कोई ई-रिक्शा सड़क पर न हो।

4. प्रतिबंधित सड़कों की सूची सार्वजनिक हो: किन तेज गति वाली सड़कों, फ्लाईओवर, मुख्य मार्गों पर ई-रिक्शा प्रतिबंधित है, इसकी सूची हर थाने, हर मेट्रो गेट और परिवहन विभाग की वेबसाइट पर हो।

5. अवैध वसूली की शिकायत पर निष्पक्ष जांच हो: दिल्ली विधानसभा मेट्रो स्टेशन समेत किसी भी स्थान पर कथित वसूली की शिकायत पर परिवहन विभाग, विजिलेंस और दिल्ली पुलिस की संयुक्त जांच हो। दोषी पाए जाने पर कानूनी कार्रवाई हो, निर्दोष को बदनाम न किया जाए।

6. बिना लाइसेंस / बिना पंजीकरण वाहन जब्त हों, लेकिन चालक का पुनर्वास भी हो: अवैध वाहन जब्त करना कानून है। साथ ही गरीब चालक को लाइसेंस प्रशिक्षण, बीमा और पंजीकरण में सरकारी सहायता मिले, ताकि वह वैध चालक बन सके। सिर्फ दंड नहीं, सुधार भी हो।

7. स्कूल बच्चों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान हो: एक ई-रिक्शा में सात-आठ बच्चे बैठाना बंद हो। स्कूलों के साथ तय रूट, तय चालक, तय संख्या की व्यवस्था हो।

8. महिला सुरक्षा के लिए विशेष व्यवस्था हो: रात में महिला यात्रियों के लिए जीपीएस, पैनिक बटन, हेल्पलाइन की व्यवस्था ई-रिक्शा में भी लागू हो।

9. लास्ट-माइल सार्वजनिक सेवा बढ़ाई जाए: मेट्रो फीडर बस, छोटी इलेक्ट्रिक बस, ग्रामीण सेवा की संख्या बढ़ाई जाए, ताकि जनता को ई-रिक्शा पर निर्भर न रहना पड़े।

10. मासिक सार्वजनिक रिपोर्ट आए: हर महीने परिवहन विभाग और यातायात पुलिस बताएं - कितने ई-रिक्शा पंजीकृत, कितने चालान, कितने जब्त, कितनी शिकायतों का निपटारा। पारदर्शिता ही संरक्षण के आरोप को खत्म करेगी।

संपादकीय टिप्पणी

दिल्ली को ई-रिक्शा की जरूरत है, लेकिन अराजक ई-रिक्शा की नहीं। चालक भी दिल्ली का नागरिक है, यात्री भी दिल्ली का नागरिक है। दोनों का अधिकार बराबर है। एक का रोजगार दूसरे की जान की कीमत पर नहीं हो सकता, और एक की सुविधा के नाम पर दूसरे का रोजगार भी नहीं छीना जा सकता।

सरकार, पुलिस और परिवहन विभाग को अब यह तय करना होगा - वे कानून के साथ खड़े हैं या मनमानी के साथ? क्योंकि जब कानून सड़क पर हारता है, तो जनता का भरोसा टूटता है और जब भरोसा टूटता है, तो जाम सिर्फ सड़क पर नहीं, व्यवस्था में भी लग जाता है।

दिल्ली को जाम मुक्त, सुरक्षित और सम्मानजनक परिवहन चाहिए। यही जनता का संवैधानिक अधिकार है।

- संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक

कार की छत पर कैरियर : वैध है या चालान? प्राइवेट और टैक्सी का फर्क समझिए, अफवाह पर नहीं, कानून पर चलिए

कैरियर लगाना अपराध नहीं, गलत तरीका अपराध है - निकालने वाला कैरियर + अपना सामान = वैध, परमानेंट वेल्डिंग + व्यापारिक माल = कार्रवाई

- प्रस्तुति : संपादकीय विभाग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

मुख्य तथ्य - एक दृष्टि में

- मूल सिद्धांत: मोटर यान अधिनियम, 1988 और केंद्रीय मोटर यान नियम, 1989 में प्राइवेट कार पर लगेज कैरियर लगाने पर कोई सीधा प्रतिबंध नहीं है।

- प्राइवेट कार (सफेद नंबर प्लेट): अपना / परिवार का निजी सामान ले जाने के लिए परमिट की जरूरत नहीं है।

- टैक्सी / कमर्शियल कार (पीली नंबर प्लेट): परमिट की शर्तों के अधीन है। परमिट में जो लिखा है, वही वैध है।

- सबसे बड़ा भ्रम: कैरियर पर चालान नहीं कटता, कैरियर के गलत इस्तेमाल पर कटता है - बाहर निकला सामान, ढीला-खुला सामान, नंबर प्लेट / लाइट छिपना, ओवरलोडिंग।

- संपादकीय चेतावनी: राज्य-वार नियम अलग हो सकते हैं। राजस्थान, गुजरात जैसे कुछ राज्यों में सख्ती / प्रतिबंध की खबरें आती रही हैं। यात्रा से पहले अपने राज्य के आरटीओ का नियम जरूर जांचें।

प्रस्तावना - छुट्टी पर जाने वाला परिवार और पुलिस का डर गर्मी की छुट्टी, शादी, या गांव जाने की तैयारी। बूट में जगह नहीं, बच्चे, सूटकेस, बैग। ऊपर कैरियर लगाया, रस्सी से बांधा, और मन में डर - कहीं पुलिस रोककर 5000 रुपये का चालान न काट दे।

दूसरी तरफ टैक्सी चालक सोचता है - टूरिस्ट का सामान छत पर रखूं तो परमिट रद्द हो जाएगा क्या?

यही भ्रम दूर करना इस संपादकीय का उद्देश्य है। हम न तो पुलिस को गलत कह रहे हैं, न चालक को। हम कानून को सरल भाषा में रख रहे हैं।

> संपादकीय स्पष्टीकरण: सोशल मीडिया पर फैल रहे कई दावे - जैसे 300-500 रुपये में आरसी में कैरियर चढ़ जाता है, या 3.8 मीटर की हाइट हर कार पर लागू है - पूरे देश के लिए एक समान स्थापित नियम नहीं हैं। नीचे हम वही लिख रहे हैं जो केंद्रीय कानून में है, और जहां राज्य का नियम अलग हो सकता है, वहां साफ लिख रहे हैं। किसी विशेष चालान को अदालत में चुनौती देनी हो, तो चालान की प्रति और राज्य की अधिसूचना के साथ वकील से सलाह लें।

1. प्राइवेट कार (सफेद नंबर प्लेट) - क्या वैध है?

कानूनी आधार:

1. धारा 66(3), मोटर यान अधिनियम, 1988 - परमिट की छूट इस धारा के अनुसार निजी उपयोग के लिए उपयोग किए जाने वाले वाहन को परिवहन वाहन की तरह परमिट की आवश्यकता नहीं होती। यानी अपनी कार में अपना सामान ले जाना व्यापारिक परिवहन नहीं है। इसीलिए परिवार का सूटकेस, बैग, बिस्तर, टेंट ले जाना वैध माना जाता है। प्राइवेट कार पर लगेज कैरियर लगाना गैरकानूनी नहीं है, इसके लिए अलग से परमिट लेने की जरूरत नहीं होती है। चालान कैरियर लगाने पर नहीं, बल्कि उसे गलत तरीके से इस्तेमाल करने पर कटता है।

2. धारा 52 - बदलाव (Alteration) का नियम धारा 52 कहती है कि मालिक वाहन में ऐसा बदलाव नहीं करेगा जिससे पंजीकरण प्रमाण पत्र (आरसी) में दर्ज निर्माता के विवरण बदल जाएं। बदलाव का अर्थ है - वाहन की संरचना में ऐसा बदलाव जिससे उसका मूल स्वरूप बदल जाए। इसीलिए:

- वैध: कंपनी / मानक क्लैंप वाला, रूफ रेल पर लगने वाला, निकालने योग्य कैरियर। इसमें ड्रिलिंग / वेल्डिंग नहीं होती, गाड़ी का मूल ढांचा नहीं बदलता।

- अवैध / जोखिम वाला: छत में छेद करके, वेल्डिंग करके परमानेंट पिंजरा बनाना, गाड़ी की चौड़ाई-लंबाई-ऊंचाई को स्थायी रूप से बदल देना। यह धारा 52 के तहत अनधिकृत बदलाव माना जा सकता है।

कैरियर को इस तरह लगाना चाहिए कि वह वाहन की संरचना को स्थायी रूप से न बदले।

3. केंद्रीय मोटर यान नियम, 1989 - नियम 93 और नियम 92 - आकार और भार नियम 93 वाहन की कुल चौड़ाई, लंबाई, ऊंचाई और ओवरहैंग की सीमा तय करता है। नियम 93 में ही सात से अधिक यात्री नहीं बैठाने वाले यात्री वाहन पर लगे लगेज कैरियर का उल्लेख है, जिससे साफ है कि सही तरीके से लगा कैरियर अपने आप में प्रतिबंधित नहीं है। इसके साथ ही नियम 93(8) में यह सिद्धांत था कि भार वाहन के बॉडी से बाहर न निकले। सुप्रीम कोर्ट में सेव लाइफ फाउंडेशन की याचिका के बाद केंद्र सरकार ने 5 मार्च 2014 की अधिसूचना से बाहर निकले सरिया / भार की छूट वाले प्रावधान को समाप्त कर दिया, यानी बाहर निकला खतरनाक भार अब सामान्य रूप से वैध नहीं है।

प्राइवेट कार के लिए 4 व्यावहारिक नियम:

1. सामान अपना हो, व्यापारिक नहीं केवल परिवार का सामान - सूटकेस, बैग, घरेलू सामान। दुकान का माल, कार्टन, सीमेंट, फर्नीचर, व्यापारिक पार्सल प्राइवेट कार में ठोना परमिट उल्लंघन माना जा सकता है। यदि आप प्राइवेट कार में व्यापारिक सामान ले जाते पकड़े गए, तो पुलिस कार्रवाई कर सकती है।

2. सामान बाहर न निकले, ढीला न हो सामान गाड़ी की तय चौड़ाई और लंबाई से बाहर नहीं निकलना चाहिए। सामान इस तरह नहीं बंधा होना चाहिए कि पीछे की गाड़ियों को खतरा हो या ड्राइवर को शीशे में देखना बंद हो जाए।

3. नंबर प्लेट, लाइट, इंडिकेटर, शीशा न छिपे सामान की वजह से नंबर प्लेट, बैक लाइट या इंडिकेटर नहीं छिपने चाहिए। नंबर प्लेट छिपना धारा 177 / 182 और राज्य नियमों के तहत चालान का कारण बन सकता है।

4. वजन सीमा का पालन हो अधिकांश निर्माता रूफ लोड सीमा 50-75 किलोग्राम बताते हैं। यात्री + सामान + कैरियर का कुल वजन वाहन की अनुमत क्षमता से अधिक नहीं होना चाहिए। ओवरलोडिंग से गाड़ी का संतुलन बिगड़ता है, ब्रेकिंग और टर्निंग पर असर पड़ता है।

चालान कब कट सकता है?

- सामान साइड से बाहर निकला हो, पीछे-आगे लटक रहा हो

- नंबर प्लेट / लाइट छिपी हो

- प्राइवेट कार में व्यापारिक माल पकड़ा जाए - तब धारा 66 / 192ए के तहत परमिट उल्लंघन की कार्रवाई हो सकती है

आरसी में कैरियर चढ़वाने का दावा - सच क्या है? कई जगह कहा जाता है कि 300-500 रुपये में आरटीओ जाकर आरसी में Roof Carrier लिखवा लें, पुलिस नहीं रोकेगी। यह पूरे देश के लिए अनिवार्य केंद्रीय नियम नहीं है। सामान्य नियम यह है कि निकालने योग्य कैरियर के लिए अलग से आरटीओ अनुमति की जरूरत नहीं होती।

फिर भी, यदि आपके राज्य / आरटीओ में कैरियर का उल्लेख / अनुमति की व्यवस्था है, तो वहां से लिखित अनुमति लेना सबसे सुरक्षित है। बिल, कैरियर का प्रमाण और आरसी साथ रखना हमेशा फायदेमंद है।

2. टैक्सी / कमर्शियल कार (पीली नंबर प्लेट) - क्यों आसान नहीं है?

कानूनी आधार:

1. धारा 74 - कॉन्ट्रैक्ट कैरिज परमिट टैक्सी धारा 74 के तहत कॉन्ट्रैक्ट कैरिज परमिट पर चलती है। परमिट में ही तय होता है - वाहन किस प्रयोजन के लिए है, कितने यात्री, किस क्षेत्र में, किन शर्तों पर। परमिट की शर्त से बाहर जाना परमिट उल्लंघन है।

2. धारा 84 - परमिट की शर्तें फिटनेस, बीमा, चालक का लाइसेंस, वाहन की स्थिति - सब परमिट की शर्तें हैं। इनके उल्लंघन पर परमिट निलंबन / रद्द हो सकता है।

3. धारा 86 और धारा 207 - कार्रवाई की शक्ति परमिट शर्तों के उल्लंघन पर परमिट निलंबन / रद्दीकरण और बिना परमिट वाहन की जब्ती की शक्ति कानून में है।

टैक्सी के लिए व्यावहारिक नियम:

- परमिट में देखिए: क्या आपके परमिट में लगेज / रूफ कैरियर की अनुमति है? यदि नहीं है, तो पहले आरटीओ से परमिट में संशोधन / अनुमति लें। बिना अनुमति कैरियर लगाना जोखिम है।

- राज्य का नियम सर्वोपरि: कई राज्यों में टैक्सी / जीप पर कैरियर को लेकर विशेष प्रतिबंध / शर्तें रही हैं। राजस्थान जैसे राज्यों में सख्ती की खबरें आती रही हैं। इसलिए दिल्ली का नियम राजस्थान में लागू नहीं होगा, और राजस्थान का नियम दिल्ली में नहीं।

- वजन और यात्री सीमा: परमिट पर जितनी यात्री क्षमता और भार क्षमता लिखी है, उतनी ही वैध है। छत पर सामान रखकर यात्री क्षमता बढ़ाना वैध नहीं है। छत पर आदमी बैठाना तो पूरी तरह प्रतिबंधित है।

- व्यापारिक माल: टैक्सी में यात्री का सामान ले जाना वैध है, लेकिन यात्री के बिना सिर्फ व्यापारिक माल ढोना, यदि परमिट में गुड्स कैरिज की अनुमति नहीं है, तो उल्लंघन हो सकता है।

5000 रुपये चालान का दावा - सच क्या है? धारा 182ए(4) में अनधिकृत बदलाव के लिए 5000 रुपये तक जुर्माना / सुधार का प्रावधान है। लेकिन हर कैरियर पर 5000 रुपये का चालान नहीं है। चालान इस बात पर निर्भर करता है कि उल्लंघन किस धारा में है - गलत लोडिंग, नंबर प्लेट छिपना, अनधिकृत बदलाव, परमिट उल्लंघन। इसलिए सोशल मीडिया का एक आंकड़ा हर मामले में लागू नहीं होता।

3. ऊंचाई का भ्रम - 3.8 मीटर किस पर लागू है? केंद्रीय नियमों में वाहन की कुल ऊंचाई की सीमा वाहन की श्रेणी के अनुसार तय है। 3.8 मीटर की सीमा सामान्य रूप से बड़े वाहनों / डबल डेकर से भिन्न वाहनों के लिए नियम 93(4) में आती है, कार की छत के कैरियर के लिए अलग से 3.8 मीटर की छूट नहीं है।

कार के लिए व्यावहारिक सिद्धांत यही है - गाड़ी + कैरियर + सामान की कुल ऊंचाई इतनी न हो कि पुल, बिजली के तार, टोल, पार्किंग में खतरा हो, और गाड़ी का संतुलन बिगड़े। माल वाहक वाहनों के लिए 13 मई 2026 की राजपत्रित अधिसूचना - केंद्रीय मोटर यान (सातवां संशोधन) नियम, 2026 - में एन1 और एन2 श्रेणी के कुछ माल वाहनों के लिए सफेद सामान / सोलर पैनल ले जाने पर कुल ऊंचाई 4.5 मीटर तक की सीमा तय की गई है। यह नियम प्राइवेट कार पर लागू नहीं होता। यह बताता है कि ऊंचाई का नियम वाहन की श्रेणी और माल के प्रकार के अनुसार बदलता है।



4. अधिसूचनाएं और व्यापिक सिद्धांत - क्या कहते हैं?

क. सड़क परिवहन मंत्रालय की 7 दिसंबर 2017 की अधिसूचना - बुल बार / क्रैश गार्ड इसमें राज्यों को धारा 52 के तहत अनधिकृत क्रैश गार्ड / बुल बार पर कार्रवाई का निर्देश दिया गया था। सिद्धांत यही है - जो एक्सेसरी वाहन की मूल संरचना और सुरक्षा को बदल दे, वह बिना अनुमति वैध नहीं है। यही सिद्धांत वेल्डेड कैरियर पर भी लागू होता है।

ख. सर्वोच्च न्यायालय - आरटीओ बनाम के. जयचंद्र (2019) सुप्रीम कोर्ट ने धारा 52 की व्याख्या में कहा कि वाहन की मूल संरचना बदलने वाला बदलाव बिना अनुमति वैध नहीं है। निकालने योग्य, सुरक्षित, निर्माता की सीमा के भीतर का कैरियर इस श्रेणी में नहीं आता, लेकिन परमानेंट बदलाव आता है।

ग. धारा 110 - केंद्र सरकार को नियम बनाने की शक्ति केंद्र स

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

देसी चिभ्भड़: पोषण और स्वास्थ्य के संभावित लाभ — तथ्यों को समझना भी ज़रूरी

डॉ. विजय गर्ग

हमारे गाँवों और खेतों में मिलने वाली अनेक देसी सब्जियाँ और जंगली फल हमारी खाद्य विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनमें से एक है चिभ्भड़ (चिभड़), जिसे कई क्षेत्रों में चटनी या अन्य व्यंजनों के रूप में खाया जाता है। आज जब हम महँगे फलों और विदेशी खाद्य पदार्थों की ओर आकर्षित हो रहे हैं, तब अपने स्थानीय खाद्य पदार्थों की पहचान और उनके पोषण संबंधी महत्व को समझना भी आवश्यक है।

चिभ्भड़ के बारे में स्वास्थ्य से जुड़े अनेक दावे किए जाते हैं। इसमें मौजूद कुछ प्राकृतिक पादप यौगिकों को लेकर वैज्ञानिकों की रुचि भी रही है। लेकिन किसी तत्व का प्रयोगशाला में लाभकारी प्रभाव दिखाना और उस फल को किसी बीमारी का प्रमाणित उपचार मान लेना, दो अलग-अलग बातें हैं।

चिभ्भड़ का पोषण संबंधी महत्व

चिभ्भड़ पर प्रकाशित शोधों में इसकी पोषण संरचना और कुछ जैविक तत्वों का अध्ययन किया गया है। एक शोध के अनुसार, इसमें पानी, कार्बोहाइड्रेट, थोड़ी मात्रा में प्रोटीन और वसा के साथ विटामिन C तथा अन्य पोषक तत्व भी पाए जाते हैं। इसलिए यह स्थानीय आहार में पोषण संबंधी विविधता बढ़ाने वाला उपयोगी फल हो सकता है।

1\. एंटीऑक्सिडेंट गुण

चिभ्भड़ में फ्लेवोनॉयड्स और फेनोलिक यौगिकों जैसे पौधों से प्राप्त तत्वों की उपस्थिति पर शोध किया गया है। ये तत्व शरीर में ऑक्सीडेटिव तनाव से लड़ने में भूमिका निभा सकते हैं। कुछ अध्ययनों में इसके संभावित एंटीऑक्सिडेंट और सूजन कम करने वाले गुणों का उल्लेख किया गया है।

2\. मधुमेह के प्रबंधन में संभावित भूमिका

चिभ्भड़ के अर्क पर किए गए कुछ प्रयोगशाला अध्ययनों में ऐसे एंजाइमों की गतिविधि को प्रभावित करने के संकेत मिले हैं, जो भोजन से ग्लूकोज के पाचन से जुड़े होते हैं। लेकिन इन परिणामों से यह प्रमाणित नहीं होता कि चिभ्भड़ मनुष्यों में मधुमेह का उपचार कर सकता है। मधुमेह के रोगियों को अपनी दवाएँ या इंसुलिन बंद नहीं करना चाहिए।

3\. पाचन तंत्र के लिए उपयोग

गाँवों में चिभ्भड़ की चटनी और अन्य व्यंजन लंबे समय से खाए जाते रहे हैं। इसका उपयोग स्थानीय भोजन परंपरा का हिस्सा है। इसमें मौजूद पोषक तत्व संतुलित आहार का हिस्सा बन सकते हैं। हालाँकि गैस, पेट दर्द, अल्सर या अपच का निश्चित उपचार होने के दावों की पुष्टि के लिए मनुष्यों पर और वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक हैं।

4\. रोगाणुओं के विरुद्ध संभावित गुण

चिभ्भड़ के कुछ अर्क पर किए गए प्रयोगशाला अध्ययनों में कुछ बैक्टीरिया और फंगस की वृद्धि को रोकने वाली गतिविधि देखी गई है। यह शोध भविष्य में दवाओं के विकास के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि चिभ्भड़ खाने से हर प्रकार के संक्रमण या ट्यूमर से बचाव हो जाता है।

5\. संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए उपयोगी

चिभ्भड़ जैसे स्थानीय फलों को संतुलित आहार में शामिल करना भोजन में विविधता बढ़ाने का अच्छा तरीका है। इसके पोषक तत्व शरीर की सामान्य आवश्यकताओं को पूरा करने में योगदान दे सकते हैं। लेकिन हार्मोन संतुलन, मासिक धर्म संबंधी समस्याओं, श्वेत प्रदर, बाल झड़ने या आँखों की रोशनी तेज करने जैसे विशेष दावों की पुष्टि के लिए विश्वसनीय मानव-अध्ययन उपलब्ध नहीं हैं।

उर्सोलिक एसिड और लूपियोल के बारे में सच्चाई

चिभ्भड़ के बारे में यह दावा भी किया जाता है कि एक छोटे फल में 225 मिलीग्राम उर्सोलिक एसिड होता है और यह कैंसर से बचाता है। इस निश्चित मात्रा और दावे की पुष्टि करने वाला विश्वसनीय वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। उर्सोलिक एसिड और लूपियोल जैसे प्राकृतिक यौगिकों पर वैज्ञानिक शोध अवश्य हो रहा है, लेकिन प्रयोगशाला में प्राप्त परिणामों को सीधे मनुष्यों के उपचार का प्रमाण नहीं माना जा सकता।

सावधानी भी आवश्यक है

चिभ्भड़ का उपयोग करने से पहले उसकी सही पहचान करना आवश्यक है। विशेष रूप से बहुत कड़वे या पूरी तरह पके जंगली फलों का सेवन बिना जानकारी के नहीं करना चाहिए। खरबूजे के कुछ जंगली समूहों के फलों में तेज़ रेचक प्रभाव हो सकता है। गर्भवती महिलाओं, बच्चों और किसी बीमारी का उपचार करा रहे व्यक्तियों को इसके औषधीय उपयोग से पहले चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए।



निष्कर्ष

चिभ्भड़ हमारी देसी खाद्य संस्कृति और ग्रामीण जीवन की एक महत्वपूर्ण पहचान है। इसमें पोषक तत्व और शोध के योग्य प्राकृतिक यौगिक मौजूद हैं। आवश्यकता है कि हम ऐसे स्थानीय फलों की पहचान करें, उनके पोषण संबंधी महत्व के बारे में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करें और उन्हें संतुलित आहार का हिस्सा बनाएँ।

हमें न तो अपने देसी खाद्य पदार्थों को कमतर समझना चाहिए और न ही बिना वैज्ञानिक प्रमाण के किसी फल को कैंसर, मधुमेह या अन्य बीमारियों का चमत्कारी उपचार बताना चाहिए। प्रकृति की देन का सही लाभ तभी मिलता है, जब उसका उपयोग ज्ञान, संतुलन और सावधानी के साथ किया जाए।

सेवानिवृत्त प्राचार्य। शिक्षाविद् एवं प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर. मलोट, पंजाब – 152107

नशे पंजाब को बर्बाद कर रहे हैं: हमारी सामूहिक जिम्मेदारी कहाँ है?

डॉ. विजय गर्ग



पंजाब एक ऐसी धरती है, जो अपनी वीरता, मेहनत, समृद्ध संस्कृति, कृषि-समृद्धि और जीवंत जीवनशैली के लिए जानी जाती है। पंजाब के लोगों ने कृषि, सेना, खेल, शिक्षा और उद्योग के क्षेत्र में देश के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लेकिन इस गौरवशाली पहचान के पीछे एक गंभीर सामाजिक चुनौती खड़ी है, जो राज्य के भविष्य को खतरे में डाल रही है। यह चुनौती है नशे की बढ़ती समस्या। नशे की लत परिवारों को बर्बाद कर रही है, समाज को कमजोर बना रही है और पूरी युवा पीढ़ी के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा रही है।

नशे की लत केवल किसी व्यक्ति की कमजोरी नहीं, बल्कि एक जटिल सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी समस्या है। यह विभिन्न सामाजिक और आर्थिक वर्गों के लोगों को प्रभावित करती है। जिन युवाओं को अपना करियर बनाना चाहिए, नए कौशल सीखने चाहिए और समाज के विकास में योगदान देना चाहिए, वे कभी-कभी नशे की गिरफ्त में आ जाते हैं। कई बार जिज्ञासा, मित्रों का दबाव, तनाव या जीवन की कठिनाइयों से बचने का प्रयास नशे की शुरुआत बन जाता है, जो धीरे-धीरे विनाशकारी आदत में बदल जाता है।

इस समस्या का प्रभाव केवल नशा करने वाले व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता। परिवारों को मानसिक पीड़ा, आर्थिक कठिनाइयों और सामाजिक अलगाव का सामना करना पड़ता है। जिन माता-पिता ने अपने बच्चों को सफल देखने के सपने संजोए होते हैं, वे कई बार उन्हें नशे से बचाने के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। नशे की समस्या से जूझ रहे व्यक्ति के भाई-बहन, जीवनसाथी और बच्चे भी असुरक्षा, चिंता और मानसिक तनाव का सामना करते हैं। कई बार नशे के कारण बेरोजगारी, घरेलू विवाद, अपराध और गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा हो जाती हैं।

इस संकट से निपटने में सबसे बड़ी बाधा एक-दूसरे पर दोषारोपण करने की प्रवृत्ति है। परिवार समाज को दोष देते हैं, समाज सरकार को, राजनीतिक दल एक-दूसरे को और प्रशासन कई बार अंतरराष्ट्रीय नशा तस्करी के नेटवर्क या पड़ोसी क्षेत्रों को जिम्मेदार ठहराता है। प्रत्येक पहलू की जाँच आवश्यक है, लेकिन केवल आरोप लगाने से समस्या का समाधान नहीं हो सकता। असली सवाल यह है कि जिम्मेदारी कौन स्वीकार करेगा और इस समस्या के समाधान के लिए ठोस कदम कौन उठाएगा?

सरकार की जिम्मेदारी है कि वह नशा तस्करी पर नियंत्रण करे, नशीले पदार्थों की आपूर्ति करने वाले नेटवर्क की पहचान करे, कानून लागू करने वाली एजेंसियों को मजबूत बनाए और नशे के अवैध कारोबार में शामिल लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित करे। नशा तस्करी के नेटवर्क की निष्पक्ष और पेशेवर ढंग से जाँच होनी चाहिए। कार्रवाई पारदर्शी और जवाबदेह होनी चाहिए। लेकिन केवल कठोर कानूनी कार्रवाई से नशे की समस्या समाप्त नहीं हो सकती। रोकथाम, उपचार, पुनर्वास और समाज में दोबारा सम्मानजनक स्थान दिलाने पर भी समान ध्यान देना आवश्यक है।

शैक्षणिक संस्थानों की भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका है। स्कूलों और कॉलेजों की जिम्मेदारी केवल पढ़ाई और परीक्षाओं तक सीमित नहीं होनी चाहिए। उन्हें विद्यार्थियों में नशे के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता पैदा करनी चाहिए। विद्यार्थियों को तनाव, चिंता, मित्रों के दबाव और व्यक्तिगत समस्याओं पर बिना किसी डर या संकोच के बात करने का अवसर मिलना चाहिए। शिक्षकों, परामर्शदाताओं और अभिभावकों को मिलकर बच्चों के व्यवहार में आने वाले बदलावों को समय रहते पहचानना चाहिए।

नशे की रोकथाम में माता-पिता की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। बच्चों को केवल आर्थिक सुविधाओं और पढ़ाई के दबाव की नहीं, बल्कि भावनात्मक सुरक्षा, समझ और खुले संवाद की आवश्यकता होती है। माता-पिता को अपने बच्चों के व्यवहार, मित्रों की संगति, आदतों और मानसिक स्थिति पर ध्यान देना चाहिए। गुस्सा करने या दंड देने के बजाय उनकी समस्याओं को समझने और आवश्यकता पड़ने पर विशेषज्ञों की सहायता लेने का प्रयास करना चाहिए।

समाज को भी नशे की समस्या से जूझ रहे लोगों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना होगा। नशे की लत को केवल शर्म या नैतिक कमजोरी का विषय नहीं समझना चाहिए। यह एक स्वास्थ्य संबंधी समस्या है, जिसके लिए चिकित्सकीय उपचार, मनोवैज्ञानिक परामर्श और लंबे समय तक सहयोग की आवश्यकता हो सकती है। प्रभावित लोगों का अपमान करना, उन्हें अकेला छोड़ देना या समाज से अलग कर देना उन्हें और अधिक निराशा की ओर धकेल सकता है। सहानुभूति, जवाबदेही और उचित उपचार ही उन्हें सामान्य जीवन की ओर लौटने में मदद कर सकते हैं।

स्वास्थ्य संस्थानों और नशा मुक्ति केंद्रों में पेशेवर, नैतिक और सुलभ सेवाएँ उपलब्ध होनी चाहिए। उपचार वैज्ञानिक प्रमाणों, योग्य चिकित्सकों की निगरानी और व्यक्ति की आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए। नशा छोड़ने के बाद भी पुनर्वास की प्रक्रिया समाप्त नहीं होती। ऐसे लोगों को परिवार का सहयोग, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर और समाज की स्वीकृति की आवश्यकता होती है। इन अवसरों की कमी दोबारा नशे की ओर लौटने का खतरा बढ़ा सकती है।

धार्मिक और सामाजिक संस्थाएँ भी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करके, प्रभावित परिवारों की सहायता करके और युवाओं को स्वस्थ गतिविधियों से जोड़कर महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। खेल क्लब, युवा संगठन, पुस्तकालय और सांस्कृतिक संस्थाएँ युवाओं को ऐसा वातावरण प्रदान कर सकते हैं, जहाँ वे आत्मविश्वास, अनुशासन और जीवन का उद्देश्य विकसित कर सकें। जिस युवा को सही दिशा, अवसर और प्रोत्साहन मिलता है, वह गलत प्रभावों का सामना अधिक मजबूती से कर सकता है।

हमें यह भी समझना चाहिए कि बेरोजगारी, अवसरों की कमी, सामाजिक दबाव, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ और निराशा कुछ लोगों को नशे की ओर धकेल सकती हैं। इसलिए रोजगार के अवसर पैदा करना, व्यावसायिक शिक्षा को मजबूत करना, खेलों को प्रोत्साहित करना और मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक लोगों की पहुँच बढ़ाना भी इस समस्या के समाधान का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

मीडिया और सोशल मीडिया की भी अपनी जिम्मेदारी है। सनसनीखेज खबरें और दुखद तस्वीरें बार-बार दिखाने से भय तो पैदा हो सकता है, लेकिन समाधान नहीं निकलता। मीडिया को नशा छोड़कर सफल जीवन जी रहे लोगों की प्रेरणादायक कहानियाँ सामने लानी चाहिए। उपचार केंद्रों के बारे में सही जानकारी देनी चाहिए और तथ्यों पर आधारित जागरूकता फैलानी चाहिए। समाज में अफवाहों और भ्रामक सूचनाओं के बजाय सही जानकारी को बढ़ावा देना आवश्यक है।

पंजाब को अब आरोप-प्रत्यारोप के एक और दौर की आवश्यकता नहीं है। उसे सरकारी विभागों, शैक्षणिक संस्थानों, स्वास्थ्य विशेषज्ञों, परिवारों, सामाजिक संगठनों और जिम्मेदार नागरिकों के संयुक्त प्रयासों की जरूरत है। प्रत्येक गाँव, शहर, स्कूल और कॉलेज को नशे की रोकथाम तथा प्रभावित लोगों की सहायता के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

पंजाब के भविष्य को केवल नारों से सुरक्षित नहीं किया जा सकता। इसके लिए प्रभावी कानून व्यवस्था, सुलभ उपचार, जिम्मेदार अभिभावक, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार के अवसर और संवेदनशील सामाजिक सहयोग की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति और संस्था को यह विचार करना होगा कि वह इस समस्या के समाधान में क्या योगदान दे सकती है।

सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह नहीं है कि पंजाब के नशा संकट के लिए कौन जिम्मेदार है, बल्कि यह है कि इसे समाप्त करने के लिए हम सब क्या करने को तैयार हैं। यदि हम एक-दूसरे को दोष देते रहे, तो एक और पीढ़ी इसका खामियाजा भुगतेगी। लेकिन यदि हम अपनी सामूहिक जिम्मेदारी स्वीकार करके एकजुट होकर प्रयास करें, तो सुधार और आशा का रास्ता खुल सकता है।

पंजाब की असली ताकत केवल उसके उपजाऊ खेतों और वीरतापूर्ण इतिहास में नहीं, बल्कि उसके लोगों के स्वास्थ्य, सम्मान और सपनों में निहित है। युवाओं को नशे से बचाना किसी एक सरकार या संस्था की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज का सामूहिक दायित्व है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य। शिक्षाविद् एवं प्रख्यात वैज्ञानिक

शरीर एक, तो इलाज अलग क्यों? व्यक्तिगत चिकित्सा का बदलता स्वरूप

डॉ. विजय गर्ग

चिकित्सा विज्ञान में लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि एक ही बीमारी से पीड़ित सभी मरीजों का उपचार लगभग एक जैसा होना चाहिए। यदि दो व्यक्तियों को मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग या कैंसर है, तो अक्सर उनके लिए समान दवाओं और उपचार पद्धतियों पर विचार किया जाता था। लेकिन आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने इस सोच को बदल दिया है। आज यह स्पष्ट होता जा रहा है कि एक ही बीमारी होने के बावजूद प्रत्येक व्यक्ति का शरीर, उसकी प्रतिक्रिया और उपचार की आवश्यकताएँ अलग-अलग हो सकती हैं।

इसी विचार को व्यक्तिगत चिकित्सा कहा जाता है। इसका मूल सिद्धांत है कि इलाज केवल बीमारी के आधार पर नहीं, बल्कि मरीज की शारीरिक बनावट, आनुवंशिक संरचना, जीवनशैली, उम्र और स्वास्थ्य संबंधी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

हर शरीर की बनावट अलग होती है

दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक संरचना और जैविक विशेषताएँ अलग होती हैं। दो व्यक्तियों की उम्र और बीमारी समान हो सकती है, लेकिन उनकी आनुवंशिक संरचना, रोग प्रतिरोधक क्षमता, हार्मोन, पाचन तंत्र और दवाओं के प्रति प्रतिक्रिया अलग हो सकती है।

उदाहरण के लिए, एक ही दवा किसी व्यक्ति के लिए बहुत प्रभावी हो सकती है, जबकि दूसरे व्यक्ति में उसका अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता। कुछ लोगों को सामान्य खुराक से लाभ होता है, जबकि कुछ को दवा के दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं।

इसका एक प्रमुख कारण आनुवंशिक अंतर है। हमारे जीन यह निर्धारित करने में भूमिका निभाते हैं कि शरीर किसी दवा को कितनी तेजी से अवशोषित, परिवर्तित और बाहर निकालता है।

आनुवंशिक परीक्षण और व्यक्तिगत उपचार

आधुनिक चिकित्सा में जीनोमिक्स (Genomics) और फार्माकोजीनोमिक्स (Pharmacogenomics) का महत्व बढ़ रहा है। फार्माकोजीनोमिक्स यह अध्ययन करता है कि किसी व्यक्ति के जीन उसकी दवाओं के प्रति प्रतिक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

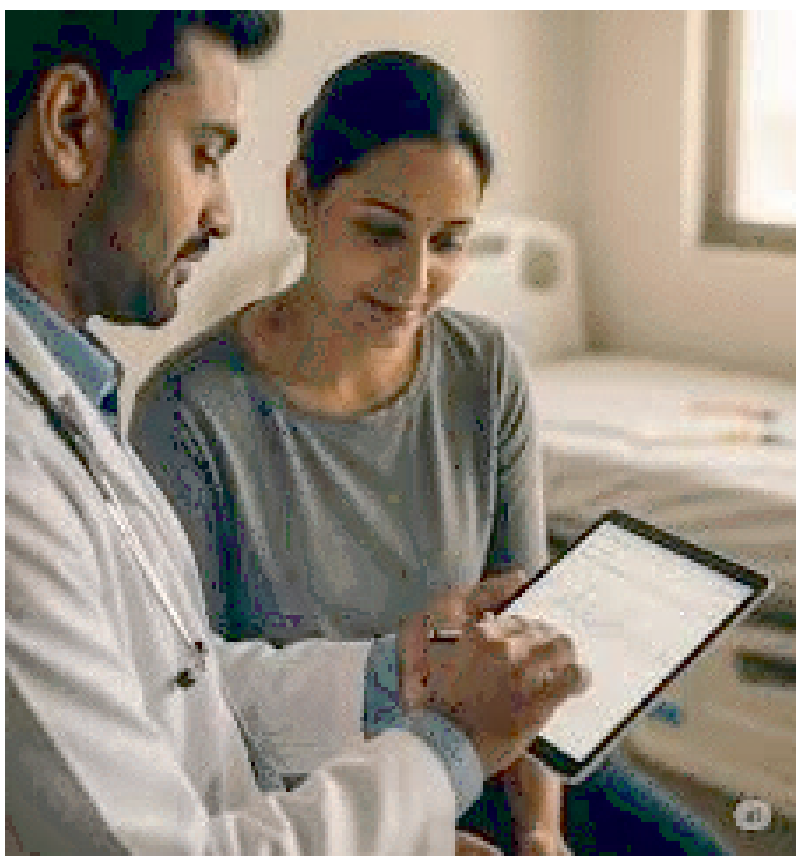
कुछ दवाएँ देने से पहले आनुवंशिक परीक्षण यह समझने में मदद कर सकते हैं कि मरीज को कौन-सी दवा अधिक उपयुक्त होगी और किस दवा से दुष्प्रभाव का खतरा बढ़ सकता है।

विशेष रूप से कैंसर के उपचार में व्यक्तिगत चिकित्सा ने महत्वपूर्ण संभावनाएँ पैदा की हैं। कुछ कैंसर मरीजों में ट्यूमर की आनुवंशिक विशेषताओं के आधार पर लक्षित उपचार चुना जाता है। इससे सामान्य कोशिकाओं को कम नुकसान पहुँचाते हुए कैंसर कोशिकाओं पर अधिक प्रभाव डालने का प्रयास किया जाता है।

हालाँकि, प्रत्येक बीमारी या प्रत्येक मरीज के लिए आनुवंशिक परीक्षण आवश्यक नहीं होता। इसका उपयोग चिकित्सकीय आवश्यकता और उपलब्ध वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर किया जाता है।

जीवनशैली भी उपचार को प्रभावित करती है

केवल जीन ही यह निर्धारित नहीं करते कि किसी व्यक्ति का उपचार कैसा होगा। खान-पान, शारीरिक गतिविधि, नींद, मानसिक तनाव, धूम्रपान, शराब का सेवन और पर्यावरण भी स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालते हैं।



उदाहरण के लिए, मधुमेह से पीड़ित दो व्यक्तियों का उपचार अलग हो सकता है। एक व्यक्ति का वजन अधिक हो सकता है, जबकि दूसरा सामान्य वजन का हो सकता है। किसी को किडनी की समस्या भी हो सकती है और किसी को हृदय रोग का खतरा अधिक हो सकता है। ऐसे में दोनों के लिए दवाओं, आहार और व्यायाम की योजना अलग-अलग बनाना आवश्यक हो सकता है। इसी प्रकार उच्च रक्तचाप के मरीजों में उम्र, किडनी की कार्यक्षमता, अन्य बीमारियों और दवाओं की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखकर उपचार निर्धारित किया जाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आधुनिक चिकित्सा

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), बिग डेटा और डिजिटल स्वास्थ्य तकनीकें व्यक्तिगत चिकित्सा को नई दिशा दे रही हैं। ये तकनीकें मरीज के मेडिकल रिकॉर्ड, प्रयोगशाला रिपोर्ट, स्कैन, आनुवंशिक जानकारी और अन्य स्वास्थ्य संबंधी आँकड़ों का विश्लेषण करने में सहायता कर सकती हैं।

इससे डॉक्टरों को बीमारी के जोखिम का आकलन करने, संभावित उपचार विकल्पों की तुलना करने और मरीज की जरूरत के अनुसार उपचार योजना बनाने में मदद मिल सकती है।

वियरेबल डिवाइस और स्मार्टवॉच भी हृदय गति, शारीरिक गतिविधि, नींद और कुछ अन्य स्वास्थ्य संकेतकों की निगरानी में सहायक बन रहे हैं। हालांकि, इन उपकरणों से प्राप्त जानकारी का चिकित्सकीय मूल्यांकन आवश्यक है।

व्यक्तिगत चिकित्सा की चुनौतियाँ

व्यक्तिगत चिकित्सा की संभावनाएँ बहुत व्यापक हैं, लेकिन इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। आनुवंशिक परीक्षण और आधुनिक उपचार कई बार महँगे होते हैं। सभी अस्पतालों में इनकी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। इसके अलावा, मरीजों की आनुवंशिक और स्वास्थ्य संबंधी जानकारी की गोपनीयता बनाए रखना भी आवश्यक है।

एक अन्य चुनौती यह है कि वैज्ञानिक अनुसंधान में प्राप्त परिणामों को विभिन्न आयु समूहों और अलग-अलग जनसंख्या पर लागू करने से पहले उनकी विश्वसनीयता सुनिश्चित की जाए। इसलिए व्यक्तिगत चिकित्सा में वैज्ञानिक प्रमाण, प्रशिक्षित विशेषज्ञ और मरीज की सहमति अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

शरीर एक जैसा दिखाई दे सकता है, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति की जैविक संरचना, जीवनशैली और स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताएँ अलग होती हैं। इसलिए सभी मरीजों के लिए एक ही उपचार पद्धति हमेशा उपयुक्त नहीं हो सकती।

भविष्य की चिकित्सा का उद्देश्य केवल बीमारी का उपचार करना नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्ट आवश्यकताओं को समझकर सुरक्षित, प्रभावी और उपयुक्त उपचार उपलब्ध कराना होगा। व्यक्तिगत चिकित्सा इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह चिकित्सा विज्ञान को सामान्य उपचार से आगे बढ़ाकर व्यक्ति-केंद्रित स्वास्थ्य सेवा की ओर ले जा रही है।

अंततः चिकित्सा का उद्देश्य केवल बीमारी को ठीक करना नहीं, बल्कि व्यक्ति को उसकी अपनी शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं के अनुरूप बेहतर स्वास्थ्य तथा गुणवत्तापूर्ण जीवन प्रदान करना है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल। प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर. मलोट, पंजाब – 152107

ऋषि धन्वंतरि का आज जन्मदिन है !!

ऋषि धनवंतरि को आयुर्वेद का जन्मदाता माना जाता है। उन्होंने विश्वभर की वनस्पतियों पर अध्ययन कर उसके अच्छे और बुरे प्रभाव-गुण को प्रकट किया। भगवान धनवंतरि ने कई ग्रंथ लखि, उनमें से ही एक है धनवंतरि संहिता जो आयुर्वेद का मूल ग्रंथ है। आयुर्वेद के आदि आचार्य सुश्रुत मुनि ने ऋषि धनवंतरि से ही इस चकित्सिाशास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया था। बाद में चरक आदि ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया

किन्तु गुलामी काल मे हिन्दू इस दिन का वास्तविक अर्थ भूल गया और इसे वस्तुएं खरीदने का दिन बना दिया।

वैदिक ज्ञान को न समझने के कारण हम न जाने और कितने पाखण्डों में गिरेंगे !!

ऋषि कहते है आयुर्वेद का पालन करो तो तुम्हारे जीवन मे ऐश्वर्य आएगा।

हमने उल्टा अर्थ लेकर खरीदारी शुरू कर दी।

आयुर्वेद ने स्वस्थ शरीर को ही धन माना है।

"पहला सुख निरोगी काया और दूजा सुख घर में माया"

धन लक्ष्मी को दूसरा दर्जा दिया गया है।

धनतेरस अर्थात भगवान ऋषि धन्वंतरि जयंती' का अर्थ :

आयुर्वेद में विद्या पूजन का अर्थ- प्रकृति, औषधि वनस्पति और इन सबसे बढ़कर प्रकृति की गोद में उपजी प्राकृतिक निधियों की पूजा अर्थात सत्कार है।

धन्वन्तरि जयंती का अर्थ महार्षि धन्वन्तरि के जन्म दिवस पर प्रकृति की अनुकूलता प्राप्त करके, प्रकृति की असीम अनुकंपा प्राप्त करना है।

धन्वंतरि नाम के ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं हुए हैं।

जिसे आज हम सर्जन कहते हैं आयुर्वेद में उसे धन्वंतरि कहा गया है। शल्य चिकित्सक नहीं।

आयुर्वेद के अनुसार, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति स्वस्थ शरीर और दीर्घायु से ही हो सकती है।

और संसार में शल्य तंत्र को पुर्णतः विकसित किया। आज संसार में शल्य तंत्र (सर्जरी) आयुर्वेद की देन है।

ऋषि धन्वंतरि के जन्मदिन की शुभकामनायें, हमारा जीवन आयुर्वेद के विरुद्ध न हो यही मेरी मंगल कामना है।

नित्य करो योग रहो निरोग
योगी बनो उप योगी
स्वस्थ रहो मस्त रहो
स्वदेशी अपनाओ देश बचाओ





धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

07 नवंबर 2026 | दिन का अंक: 1 — नई शुरुआत, नेतृत्व, पहल, स्वतंत्रता और केंद्रित कर्म

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 1 आपकी नेतृत्व ऊर्जा को नया आरंभ और गति देता है। किसी योजना, प्रस्ताव या आर्थिक लक्ष्य की पहल करें, लेकिन तेजी से आगे बढ़ने से पहले पहला पड़ाव स्पष्ट रखें।
रिश्ते: आज आप स्वाभाविक रूप से नेतृत्व लेना चाह सकते हैं। पहल रिश्ते को मजबूत करेगी, यदि उसमें सामने वाले की इच्छा भी शामिल हो और बात एकतरफा न बने।
सावधानी: अधीरता, अहंकार में निर्णय और केवल प्रभाव जमाने के लिए खर्च करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: आत्मविश्वास के साथ एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता शुरू करें और उसकी स्पष्ट व्यावहारिक योजना बनाएं।

मूलांक 2

धन व करियर: दिन 1 आपकी सहयोगी प्रकृति को अधिक निर्णायक बनने के लिए प्रेरित करता है। साझेदारी या धन से जुड़े विषय में दूसरों के निर्णय का इंतजार करने के बजाय अपनी स्थिति स्पष्ट रखें।
रिश्ते: संवेदनशीलता आपकी ताकत है, लेकिन आज सीधी अभिव्यक्ति गलतफहमी रोक सकती है। अपनी जरूरत बताएं, पर मांग करने वाले न बनें।
सावधानी: हिचकिचाहट, निर्भरता और केवल किसी को खुश करने के लिए आर्थिक प्रतिबद्धता लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक स्वतंत्र निर्णय लें और स्पष्ट संवाद से सामंजस्य बनाए रखें।

मूलांक 3

धन व करियर: दिन 1 आपकी रचनात्मक और अभिव्यक्तिपूर्ण प्रकृति में नई गति लाता है। विचार प्रस्तुत करें, प्रस्तुति शुरू करें या अपनी प्रतिभा सामने रखें, लेकिन उत्साह को मापने योग्य लक्ष्य से जोड़ें।
रिश्ते: आपका आत्मविश्वास और आकर्षण स्पष्ट रहेगा। इसका उपयोग सकारात्मक बातचीत शुरू करने में करें, न कि हर बात को केवल अपनी योजनाओं के आसपास रखने में।
सावधानी: बहुत से काम एक साथ शुरू करना, बढ़ा-चढ़ाकर वादे और ध्यान खींचने के लिए अनावश्यक खर्च से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपने सबसे मजबूत विचार को चुनें और उसे केंद्रित शुरुआत दें।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 1 आपकी व्यवस्थित प्रकृति में नई शुरुआत की ऊर्जा लाता है। उपयोगी सिस्टम शुरू करें, रुका प्रोजेक्ट दोबारा चलाएं या ऐसा व्यावहारिक आर्थिक निर्णय लें जो आगे बढ़ाए।
रिश्ते: आप परिचित दिनचर्या पसंद कर सकते हैं, जबकि आज नया तरीका उपयोगी होगा। संवाद में छोटा बदलाव भी निकटता बढ़ा सकता है।
सावधानी: जिद, नए तरीके को बिना जांचे नकारना और हर विवरण पूर्ण होने तक कार्रवाई टालने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक अच्छी तरह सोचा सुधार शुरू करें और जरूरत के अनुसार बदलाव की जगह रखें।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 1 आपकी अनुकूल प्रकृति के साथ मिलकर नए संपर्क, व्यवसायिक विचार और अवसरों में मजबूत गति देता है। चुनाव सोच-समझकर करें ताकि उत्साह प्रगति बने, अधूरी शुरुआत नहीं।
रिश्ते: सहजता रिश्ते में ताजगी ला सकती है, लेकिन योजना बदलने से पहले बताएं। स्वतंत्रता तब बेहतर रहती है जब उससे अनिश्चितता न बने।
सावधानी: अचानक खरीदारी, जरूरत से ज्यादा प्रतिबद्धता और एक अवसर से दूसरे पर लगातार कूदने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक आशाजनक शुरुआत चुनें और उसे पूरा ध्यान व फॉलो-अप दें।

मूलांक 6

धन व करियर: दिन 1 आपको क्लाइंट, परिवार या धन से जुड़े विषय में पहल करने को प्रेरित करता है। नई सेवा, सुधार या आर्थिक योजना लाभ दे सकती है, यदि आराम और दिखावा लाभप्रदता पर भारी न पड़े।
रिश्ते: आप नेतृत्व लेकर सामंजस्य बनाना चाह सकते हैं। गर्मजोशी और पहल रखें, लेकिन सामने वाले को बराबर योगदान करने दें।
सावधानी: अधिकार भावना, आराम पर अधिक खर्च और सबके चुनावों की जिम्मेदारी स्वयं लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक ऐसा व्यावहारिक सुधार शुरू करें जो मूल्य और सामंजस्य दोनों मजबूत करे।

मूलांक 7

धन व करियर: दिन 1 आपकी गहरी सोच को विश्लेषण से कार्रवाई की ओर ले जाता है। कोई शोध किया विचार, विशेष कौशल या रणनीतिक योजना अब स्पष्ट पहला कदम मांगती है।
रिश्ते: आप बातों को निजी रूप से समझना पसंद कर सकते हैं, लेकिन आज ईमानदार संवाद की पहल लाभ देगी। चुप्पी से दूरी बनने से पहले अपनी बात साझा करें।
सावधानी: अत्यधिक विश्लेषण, अलगाव और पूर्ण निश्चितता के इंतजार में अच्छे अवसर को टालने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक अच्छी तरह सोची समझ पर कदम लें और शुरुआत सरल रखें।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 1 आपकी महत्वाकांक्षी और अनुशासित प्रकृति में पहल की शक्ति बढ़ाता है। नया आर्थिक लक्ष्य तय करने, प्रोजेक्ट का नेतृत्व करने या महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को बेहतर ढंग से व्यवस्थित करने के लिए अच्छा दिन है।
रिश्ते: दबाव बढ़ने पर मजबूत इच्छा नियंत्रण में बदल सकती है। तुरंत सहमति की अपेक्षा करने के बजाय स्पष्टता और सम्मान से नेतृत्व करें।
सावधानी: शक्ति संघर्ष, प्रतिष्ठा के लिए खर्च और आधार तैयार होने से पहले परिणाम जबरदस्ती पाने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक शक्तिशाली लक्ष्य तय करें और उसे शुरू करने वाला अनुशासित कदम स्पष्ट करें।

मूलांक 9

धन व करियर: दिन 1 आपकी जोशीली ऊर्जा को नए अध्याय की ओर ले जाता है। पुराने विषय पूरे करने के बाद संसाधनों को उद्देश्यपूर्ण नए लक्ष्य में लगाएं और बीती जिम्मेदारियां आज पर न ढोएं।
रिश्ते: पुराने विवाद को बार-बार दोहराना छोड़ने पर नया भावनात्मक माहौल बन सकता है। जरूरी सीमाएं बनाए रखते हुए स्वस्थ पैटर्न की पहली पहल करें।
सावधानी: क्रोध में निर्णय, आवेग में उदारता और पुराने विषय को सच में छोड़े बिना नया शुरू करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक नई दिशा चुनें और साहस, स्पष्टता व उद्देश्य के साथ उसमें कदम रखें।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

धनतेरस से भाई दूज तक छह दिनों का दीपोत्सव महाकुंभ - अयोध्या से अमेरिका तक दीपों की जगमगाहट

धन्वंतरि से लक्ष्मी-गणेश, गोवर्धन और भाई दूज तक - आस्था, आरोग्य, गौसेवा, पर्यावरण और पारिवारिक रिश्तों का अद्भुत संगम

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया, महाराष्ट्र



वैश्विक स्तर पर धनतेरस से दीपावली और भाई दूज तक छह दिनों का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महोत्सव 6 नवंबर 2026, शुक्रवार को धनतेरस के साथ शुरू हुआ, जिसका समापन 11 नवंबर, बुधवार को भाई दूज के साथ होगा। भारत में दीपावली केवल एक धार्मिक त्योहार नहीं, बल्कि हजारों वर्षों की सांस्कृतिक विरासत, वैदिक दर्शन, पारिवारिक एकता, आर्थिक गतिविधियों, पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक सद्भाव का अद्भुत संगम है।

तथ्य एक नज़र में - बिंदु - विवरण

महापर्व धनतेरस से भाई दूज तक - 6 दिवसीय दीपोत्सव

अवधि 6 नवंबर (धनतेरस) से 11 नवंबर (भाई दूज) 2026 तक

पहला दिन धनतेरस - धन्वंतरि पूजन, यम दीपदान, खरीदारी

दूसरा दिन नरक चतुर्दशी / छोटी दीपावली - बुराइयों के अंत का प्रतीक

तीसरा दिन दीपावली - लक्ष्मी-गणेश पूजन

चौथा दिन गोवर्धन पूजा / अन्नकूट - गौसेवा, प्रकृति संरक्षण

पांचवां-छठा दिन भाई दूज / यम द्वितीया - भाई-बहन के प्रेम का पर्व

वैश्विक विस्तार लेखक के अनुसार व्हाइट हाउस में दीपोत्सव, 5 राज्यों के गवर्नर, 20+ मेयरों ने मनाया पर्व

पर्यावरण नियम दिल्ली-एनसीआर में सुप्रीम कोर्ट के अनुसार 7-8 नवंबर को सीमित ग्रीन पटाखों की अनुमति, समय सुबह 6-7 और रात 8-10 बजे तक

मुख्य बिंदु

1. पहला संदेश - आरोग्य ही धन है धनतेरस पर भगवान धन्वंतरि की आराधना करके आरोग्य और दीर्घायु की कामना की गई। वास्तविक धन केवल संपत्ति नहीं, स्वस्थ शरीर, प्रसन्न मन और संतुष्ट परिवार भी है।

2. अर्थव्यवस्था का महाकुंभ आभूषण, वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, वाहन, मिठाइयां, मिट्टी के दीपक और हस्तशिल्प से जुड़े व्यापारियों के लिए यह वर्ष का महत्वपूर्ण अवसर है। छोटे दुकानदारों, कारीगरों, कुम्हारों, महिला स्वयं सहायता समूहों को रोजगार मिलता है। स्थानीय और स्वदेशी को प्राथमिकता देना आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में सार्थक कदम है।

3. वैदिक दर्शन - तमसो मा ज्योतिर्गमय उपनिषदों की प्रार्थना - हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो - ही इस पर्व का मूल दर्शन है। श्रीराम के 14 वर्ष वनवास के बाद अयोध्या लौटने पर दीप जलाए गए, तभी से दीपोत्सव को प्रतिष्ठा मिली।

4. लक्ष्मी के आठ स्वरूप आद्यालक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, सौभाग्यलक्ष्मी, अमृतलक्ष्मी, कामलक्ष्मी, सत्यलक्ष्मी, भोगलक्ष्मी और योगलक्ष्मी - वास्तविक लक्ष्मी केवल धन नहीं, विद्या, सौभाग्य, सदाचार, स्वास्थ्य, संतोष और आध्यात्मिक उन्नति भी है।

5. धन के साथ सद्बुद्धि लक्ष्मी-गणेश की संयुक्त पूजा का संदेश है - धन तभी कल्याणकारी है, जब उसका उपयोग विवेक, ईमानदारी और लोकहित में हो। सद्बुद्धि के बिना संपत्ति अहंकार और विनाश का कारण बन सकती है।

6. पर्यावरण - उत्सव दूसरों की सांसों की कीमत पर नहीं सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का पालन करें। अस्पताल, नर्सिंग होम, वृद्धाश्रम, स्कूल और साइलेंस जोन के 300 मीटर दायरे में पटाखे न चलाएं। बैरियम युक्त, सीरीज वाली लड़ियों और गैर-प्रमाणित पटाखों पर रोक है। केवल सीएसआईआर-नीरी प्रमाणित ग्रीन पटाखे ही लें।

विस्तृत विवरण

धनतेरस - धन्वंतरि का अवतारः समुद्र मंथन के दौरान भगवान धन्वंतरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए। उन्हें आयुर्वेद का प्रवर्तक माना जाता है। इस दिन प्रदोषकाल में यम दीपदान, मां लक्ष्मी और कुबेर की पूजा की परंपरा है। पंचमहाभूत - आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी के संतुलन के बिना स्वस्थ जीवन संभव नहीं।

नरक चतुर्दशीः भगवान श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर वध की कथा से जुड़ा यह पर्व अन्याय और नकारात्मकता के विनाश का प्रतीक है। प्रातः अभ्यंग स्नान, दीप प्रज्वलन की परंपरा है। मनुष्य को क्रोध, ईर्ष्या, लोभ और द्वेष को समाप्त करने का संकल्प लेना चाहिए।

दीपावली - लक्ष्मी-गणेश पूजनः अमावस्या की रात्रि में महालक्ष्मी और गणेश की पूजा होती है। कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती - हाथों से अच्छे कर्म करना, जरूरतमंद की सहायता करना ही इस दर्शन का व्यावहारिक स्वरूप है।

गोवर्धन पूजाः कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा और अन्नकूट मनाया जाता है। श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा की कथा प्रकृति और सामुदायिक एकता का संदेश देती है। गायों को सजाकर पूजन, अन्नकूट का आयोजन होता है। यह हमें अन्न का अपव्यय रोकने और पशुधन की रक्षा की प्रेरणा देता है।

भाई दूजः पौराणिक कथा के अनुसार यमुना ने भाई यमराज को तिलक लगाकर भोजन कराया। यमराज ने वरदान दिया कि इस दिन जो बहन भाई को तिलक लगाकर भोजन कराए, उसके भाई को अकाल मृत्यु का भय न रहे। यह पर्व बहन के सम्मान, स्नेह और सुरक्षा का उत्सव है।

व्हाइट हाउस में दीपावली - लेखक के अनुसारः लेखक के विवरण अनुसार 6 नवंबर 2026 को अमेरिकी राष्ट्रपति ने व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस में दीप प्रज्वलित किए। व्हाइट हाउस में दीपावली मनाने की परंपरा जॉर्ज डब्ल्यू. बुश के कार्यकाल में शुरू हुई, 2009 में बराक ओबामा दीप प्रज्वलित करने वाले पहले राष्ट्रपति बने। इस वर्ष इडाहो, नेब्रास्का, मोंटाना, नॉर्थ डकोटा और वाशिंगटन के गवर्नरों ने पहली बार सरकारी परिसरों में समारोह आयोजित किए, ओरेगन में 10 नवंबर को समारोह प्रस्तावित है। 20 से अधिक मेयरों ने सिटी हॉल में कार्यक्रम किए। वाशिंगटन में दीपावली और बंदी छोड़ दिवस को आधिकारिक उत्सव मान्यता देने की विधायी पहल भी हुई।

> संपादकीय नोटः व्हाइट हाउस और सुप्रीम कोर्ट से जुड़े तथ्य लेखक द्वारा दिए गए विवरण के आधार पर प्रस्तुत हैं। पाठक स्थानीय प्रशासन और आधिकारिक आदेशों से पुष्टि करें।

जनहित संदेश

1. कर्ज और दिखावे से बचें: अपनी सामर्थ्य के अनुसार खर्च करें, खुशियां बांटें।

2. स्थानीय को अपनाएं: मिट्टी के दीये, स्थानीय दुकानदार, स्वदेशी उत्पाद को प्राथमिकता दें।

3. पर्यावरण नियम मानें: ग्रीन पटाखे ही, तय समय पर ही, साइलेंस जोन से दूर।

4. बुजुर्गों का सम्मान: किसी अकेले बुजुर्ग के जीवन में खुशियों का प्रकाश पहुंचाएं।

5. महिलाओं की सुरक्षा: भाई-बहन का प्रेम ही नहीं, महिलाओं के सम्मान को पारिवारिक संस्कार बनाएं।

संपादकीय निष्कर्ष दीपावली केवल दीप जलाने का नहीं, जीवन को प्रकाशित करने का महापर्व है। धनतेरस स्वास्थ्य और समृद्धि, नरक चतुर्दशी बुराइयों के विनाश, दीपावली सद्बुद्धि, गोवर्धन प्रकृति तथा गौसेवा, और भाई दूज पारिवारिक प्रेम का संदेश देती है।

आइए, इस दीपावली मिट्टी के दीपों से घर रोशन करें, स्थानीय व्यापारियों को प्रोत्साहन दें, प्रदूषण नियमों का पालन करें, मिठास बांटें। क्योंकि असली दीपावली तब होगी, जब हर घर में खुशियां, हर चेहरे पर मुस्कान, हर मन में सद्भाव और हर जीवन में स्वास्थ्य एवं समृद्धि का उजाला होगा।

कंपोजिट विद्यालय गहिरा में दीपोत्सव की धूम

बच्चों ने रंगोली के जरिए दिया सामाजिक संदेश



गोरखपुर। धनतेरस और दीपावली के पावन पर्व के उपलक्ष्य में शुक्रवार को विकासखंड खोराबार स्थित कंपोजिट विद्यालय गहिरा में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान स्कूली बच्चों ने अपनी कलात्मक प्रतिभा और रचनात्मकता से पूरे विद्यालय परिसर को उत्सव के रंग में सराबोर कर दिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रंगोली प्रतियोगिता रही, जिसमें छात्र-छात्राओं ने विभिन्न रंगों और फूलों के माध्यम से मनमोहक आकृतियाँ उकेरीं। बच्चों ने अपनी रंगोलियों के माध्यम से 'पर्यावरण संरक्षण' और 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक विषयों पर संदेश दिए। दीपावली के पारंपरिक विषयों पर आधारित इन कलाकृतियों ने बच्चों के भीतर छिपी रचनात्मक सोच को प्रदर्शित किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा, त्योहार हमारी समृद्ध संस्कृति की पहचान हैं। दीपावली का यह पर्व हमें अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने और बुराई पर अच्छाई की जीत की प्रेरणा देता है। उन्होंने बच्चों को सुरक्षित, शांतिपूर्ण और प्रदूषण मुक्त दीपावली मनाने का संकल्प भी दिलाया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के समस्त शिक्षक और शिक्षिकाएं उपस्थित रहे, जिन्होंने बच्चों के प्रयासों की सराहना की और उन्हें त्यौहार की शुभकामनाएं दीं। विद्यालय में आयोजित इस दीपोत्सव ने बच्चों के बीच आपसी सहयोग और सांस्कृतिक गौरव की भावना को और सुदृढ़ किया।



पटाखों के अवैध भंडारण पर प्रशासन सख्त, तीन गोदामों पर संयुक्त टीम की छापेमारी

एसडीएम झज्जर रवि मीणा के नेतृत्व में अधिकारियों की टीम ने तीन स्थानों पर की जांच, एफएसएल भेजे पटाखों के नमूने
प्रतिबंधित पटाखों और नियमों की अनदेखी पर होगी सख्त कार्रवाई,



झज्जर, 6 नवंबर।

जिला में अवैध पटाखों के भंडारण और बिक्री पर अंकुश लगाने के लिए जिला प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए शुक्रवार को तीन स्थानों पर संयुक्त छापेमारी की। डीसी वर्षा खांगवाल के निर्देश पर एसडीएम झज्जर रवि मीणा के नेतृत्व में गठित टीम ने तीन स्थानों का निरीक्षण कर पटाखों के भंडारण, बिक्री संबंधी लाइसेंस, सुरक्षा मानकों और ग्रीन पटाखों से जुड़े दस्तावेजों की जांच की। निरीक्षण के दौरान पुलिस ने पटाखों के नमूने एकत्रित कर वैज्ञानिक जांच के लिए फॉरेंसिक साइंस लेबोरेटरी (एफएसएल) भेजे हैं। जांच रिपोर्ट के आधार पर नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर संबंधित के खिलाफ नियमानुसार कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

एसडीएम रवि मीणा ने स्पष्ट किया कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों और प्रशासनिक आदेशों की अवहेलना किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं की जाएगी। पटाखों के कारोबार से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति को निर्धारित नियमों, लाइसेंस की शर्तों और सुरक्षा मानकों का पालन करना अनिवार्य है।

केवल अनुमोदित ग्रीन पटाखों की बिक्री की अनुमति

एसडीएम ने बताया कि जिला में केवल राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (नीरी) द्वारा अनुमोदित ग्रीन पटाखों के इस्तेमाल की अनुमति है। प्रत्येक पैकेट पर ग्रीन क्रैकर की पहचान और उत्पाद-विशिष्ट क्यूआर कोड होना अनिवार्य है। बेरियम युक्त पटाखों, पारंपरिक प्रतिबंधित पटाखों तथा पटाखों की लड़ियों की बिक्री और इस्तेमाल पर प्रतिबंध है। विक्रेताओं को पटाखों की प्रामाणिकता सुनिश्चित करनी होगी। नियमों के विपरीत पटाखों का भंडारण या बिक्री पाए जाने पर कार्रवाई की जाएगी।

*** 7 और 8 नवंबर को निर्धारित समय में ही चला सकेंगे पटाखे***

एसडीएम ने बताया कि प्रशासन द्वारा जारी आदेशों के अनुसार 7 और 8 नवंबर को सुबह 6 से 7 बजे तथा रात्रि 8 से 10 बजे तक ही ग्रीन पटाखे चलाने की अनुमति रहेगी। 9 नवंबर से जिला में सभी प्रकार के पटाखों के निर्माण, भंडारण, बिक्री और इस्तेमाल पर पूर्ण प्रतिबंध पुनः लागू हो जाएगा। इसके अलावा अस्पतालों, शिक्षण संस्थानों, वृद्धाश्रमों तथा अधिसूचित क्षेत्रों के 300 मीटर के दायरे में पटाखे चलाने की अनुमति नहीं होगी।

नियम तोड़ने वालों पर जब्ती से लेकर लाइसेंस निरस्तीकरण तक की कार्रवाई

एसडीएम रवि मीणा ने आमजन से अपील की कि वे केवल नीरी अनुमोदित ग्रीन पटाखे ही चलाएं और पैकेट पर दिए गए क्यूआर कोड की जांच अवश्य करें। निर्धारित समय और स्थान संबंधी नियमों का उल्लंघन न करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि अवैध भंडारण, बिना अनुमति बिक्री अथवा प्रतिबंधित पटाखों की खरीद-बिक्री पाए जाने पर पटाखे जब्त करने, लाइसेंस निरस्त करने, सुरक्षा राशि जब्त करने और कानूनी कार्रवाई करने में कोई ढिलाई नहीं बरती जाएगी। उन्होंने बताया कि डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में झज्जर में नियमों की पालना सुनिश्चित करने के लिए प्रशासन का निरीक्षण और निगरानी अभियान लगातार जारी रहेगा।

निरीक्षण के दौरान झज्जर तहसीलदार शेखर नरवाल, बीडीपीओ माछरौली धर्मपाल, संबंधित थाना प्रभारी, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारी शामिल रहे।

20 नवंबर तक धूल उड़ाने वाली तोड़फोड़ व खुले में निर्माण गतिविधियों पर प्रतिबंध : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

डीसी वर्षा खांगवाल ने ग्रेप-2 के तहत सभी विभागों को सख्ती से नियम लागू करने के दिए निर्देश
औद्योगिक इकाइयों, सड़कों की धूल, वाहनों के धुएं और खुले में कचरा जलाने पर भी रहेगी कड़ी निगरानी

झज्जर, 06 नवंबर

एनसीआर में वायु प्रदूषण की रोकथाम के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने आगामी 20 नवंबर 2026 तक अतिरिक्त एहतियाती उपाय लागू करने के निर्देश जारी किए हैं। इसके तहत इस अवधि में धूल उत्पन्न करने वाली तोड़फोड़ गतिविधियों और खुले में निर्माण कार्यों पर प्रतिबंध रहेगा। निर्धारित छूट वाली गतिविधियों को छोड़कर अन्य प्रतिबंधित गतिविधियों पर सख्ती से रोक सुनिश्चित की जाएगी। डीसी वर्षा खांगवाल ने सभी संबंधित विभागों एवं एजेंसियों को इन निर्देशों की प्रभावी अनुपालना सुनिश्चित करने के आदेश दिए हैं।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि एनसीआर में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के दूसरे चरण (ग्रेप-2) के तहत भी वायु प्रदूषण नियंत्रण के उपाय लागू हैं। सभी विभाग अपने-अपने क्षेत्राधिकार में इन उपायों को पूरी गंभीरता से लागू करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रदूषण नियंत्रण के मामले में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

निर्माण एवं तोड़फोड़ गतिविधियों पर रहेगी विशेष निगरानी

डीसी ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि आगामी 20 नवंबर तक प्रतिबंधित निर्माण एवं तोड़फोड़ गतिविधियों पर विशेष निगरानी रखी जाए। सभी अधिकारी अपने क्षेत्र में नियमित निरीक्षण करें और आदेशों की अवहेलना करने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि सभी विभाग पर्याप्त कर्मचारियों एवं मशीनरी की तैनाती करते हुए इन निर्देशों का जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन सुनिश्चित करें।

*** औद्योगिक इकाइयों और प्रदूषण के अन्य स्रोतों पर सख्ती***

डीसी ने हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, बहादुरगढ़ के क्षेत्रीय अधिकारी को औद्योगिक इकाइयों एवं अन्य प्रदूषणकारी गतिविधियों का सघन निरीक्षण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि औद्योगिक उत्सर्जन, वाहनों से होने वाले प्रदूषण, सड़कों की धूल तथा खुले में कूड़ा-कचरा और बायोमास जलाने जैसी गतिविधियों पर विशेष निगरानी रखी जाए। नियमों का उल्लंघन करने वाली इकाइयों एवं व्यक्तियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए।

सड़कों की धूल रोकने के लिए एंटी स्मॉग गन और पानी के छिड़काव पर जोर

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि सड़कों पर उड़ने वाली धूल को



नियंत्रित करने के लिए संबंधित विभाग एंटी स्मॉग गन और पानी के छिड़काव की व्यवस्था प्रभावी ढंग से करें। निर्माण स्थलों पर धूल को हवा में फैलने से रोकने के लिए जरूरी उपाय किए जाएं। खुले में कूड़ा-कचरा और फसल अवशेष जलाने वालों पर कड़ी निगरानी रखी जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि नियमों की अवहेलना करने वालों के चालान किए जाएं और जरूरत पड़ने पर कूड़ा जलाने वालों के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज करवाई जाए।

प्रदूषण नियंत्रण में जिलावासी भी निभाएं सक्रिय भूमिका

डीसी ने जिलावासियों से वायु प्रदूषण नियंत्रण अभियान में सहयोग की अपील करते हुए कहा कि नागरिक अपने वाहनों के पीयूसी प्रमाणपत्र अपडेट रखें, लाल बत्ती पर इंजन बंद करें और वाहनों का उचित रखरखाव सुनिश्चित करें। खुले में कूड़ा न डालें और न ही जलाएं। अधिक से अधिक पौधे लगाएं तथा पर्यावरण अनुकूल गतिविधियों को अपनाएं।

ग्रीन पटाखों के नियमों की पालना के लिए ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त : जिलाधीश

7 व 8 नवंबर को निर्धारित समय पर ही कर सकेंगे ग्रीन पटाखों का इस्तेमाल
सोमवार 9 नवंबर 2026 से सभी प्रकार के पटाखों पर फिर लागू होगा पूर्ण प्रतिबंध
नियमों का उल्लंघन करने वालों पर होगी कानूनी कार्रवाई
जिलाधीश वर्षा खांगवाल ने जारी किए आदेश

झज्जर, 06 नवंबर।



दीपावली पर्व के दौरान वायु एवं ध्वनि प्रदूषण पर नियंत्रण रखने तथा सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों की अनुपालना में ग्रीन पटाखों के इस्तेमाल को लेकर जिलाधीश वर्षा खांगवाल ने व्यापक दिशा-निर्देश जारी किए हैं। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 के तहत जारी आदेशों के अनुसार जिला झज्जर में केवल निर्धारित शर्तों के अनुरूप प्रमाणित ग्रीन पटाखों के इस्तेमाल की अनुमति होगी। ग्रीन पटाखे 7 व 8 नवंबर को सुबह 6 से 7 बजे तथा रात्रि 8 से 10 बजे तक ही फोड़े जा सकेंगे। वहीं, 9 नवंबर से जिला झज्जर की सीमा में सभी प्रकार के पटाखों के निर्माण, भंडारण, बिक्री और इस्तेमाल पर दोबारा पूर्ण प्रतिबंध लागू हो जाएगा।

जिलाधीश वर्षा खांगवाल ने दीपावली के दौरान आदेशों की प्रभावी पालना सुनिश्चित करने के लिए जिला के चारों उपमंडलों झज्जर, बेरी, बादली और बहादुरगढ़ में ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किए हैं। संबंधित एसडीएम अपने-अपने उपमंडल में ओवरऑल इंचार्ज होंगे और सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) के साथ समन्वय स्थापित कर कानून व्यवस्था तथा ग्रीन पटाखों से संबंधित निर्देशों की पालना सुनिश्चित करेंगे।

झज्जर, बेरी, बादली और बहादुरगढ़ में अधिकारी संभालेंगे जिम्मेदारी

जिलाधीश की ओर से जारी आदेशों के अनुसार झज्जर उपमंडल में कार्यकारी अभियंता युद्धवीर सिंह, नायब तहसीलदार अंशुल तथा खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी राहुल मेहरा को ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। बेरी उपमंडल में नायब तहसीलदार मनोज और नवदीप को जिम्मेदारी सौंपी गई है। बादली उपमंडल में खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी धर्मपाल तथा नायब तहसीलदार अरविंद ड्यूटी मजिस्ट्रेट के रूप में तैनात रहेंगे।

इसी प्रकार बहादुरगढ़ उपमंडल में नायब तहसीलदार प्रवीण, कार्यकारी अभियंता अमन मोर, एचएसआईआईडीसी के वरिष्ठ प्रबंधक रोबिन बाटला, सहायक श्रम आयुक्त राजेंद्र हुड्डा तथा लोक निर्माण विभाग के उपमंडल अभियंता राजेश तोमर को ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। सभी अधिकारी अपने निर्धारित क्षेत्रों में पुलिस के साथ समन्वय बनाकर निगरानी और निरीक्षण का कार्य करेंगे।

संयुक्त टीम करेंगी निरीक्षण, क्यूआर कोड से होगी पटाखों की पहचान

जिलाधीश वर्षा खांगवाल ने बताया कि आदेशों की पालना के लिए थाना स्तर पर पुलिस और ड्यूटी मजिस्ट्रेट की संयुक्त गश्त एवं निरीक्षण टीम गठित की गई हैं। संबंधित एसडीएम इन टीमों के समग्र पर्यवेक्षण के लिए नोडल प्राधिकारी होंगे, जबकि अतिरिक्त उपायुक्त जिला स्तर पर निगरानी करेंगे। संयुक्त टीमें निर्धारित बिक्री केंद्रों, दुकानों, भंडारण स्थलों और अन्य संबंधित स्थानों पर नियमित जांच करेंगी। प्रमाणित ग्रीन पटाखों की पहचान के लिए क्यूआर कोड की सत्यता जांची जाएगी तथा आवश्यकता पड़ने पर नमूने लेकर पेट्रोलियम एवं विस्फोटक सुरक्षा संगठन (पीईएसओ) को भेजे जाएंगे। प्रतिबंधित पटाखे मिलने पर उन्हें तुरंत जब्त किया जाएगा।

शांत क्षेत्रों में 300 मीटर के दायरे में पटाखे फोड़ने पर रोक

जारी आदेशों के तहत जिला भर में अस्पतालों, नर्सिंग होम, प्राथमिक एवं जिला स्वास्थ्य केंद्रों, वृद्धाश्रमों, शिक्षण संस्थानों तथा अधिसूचित शांत क्षेत्रों के 300 मीटर के दायरे को नो-क्रैकर जोन घोषित किया गया है। इन क्षेत्रों में किसी भी प्रकार के पटाखे फोड़ने की अनुमति नहीं होगी। निर्धारित तिथि और समय के अतिरिक्त पटाखों का इस्तेमाल भी प्रतिबंधित रहेगा।

उल्लंघन पर होगी सख्त कानूनी कार्रवाई

जिलाधीश वर्षा खांगवाल ने स्पष्ट किया कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुरूप 9 नवंबर 2026 से जिला में सभी प्रकार के पटाखों के निर्माण, भंडारण, बिक्री और इस्तेमाल पर पूर्ण प्रतिबंध लागू रहेगा। आदेशों की अवहेलना करने वालों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता, 2023 की धारा 223 सहित अन्य संबंधित कानूनी प्रावधानों के तहत कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा प्रतिबंधित पटाखों की जब्ती, सुरक्षा राशि जब्त करने और लाइसेंस रद्द करने जैसी कार्रवाई भी की जा सकती है।

उन्होंने अधिकारियों को पटाखों के दुष्प्रभावों और प्रमाणित ग्रीन पटाखों की पहचान के संबंध में जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश दिए। साथ ही आमजन से अपील की कि वे पर्यावरण और स्वास्थ्य की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों की पालना करें और दीपावली का पर्व शांतिपूर्ण एवं सुरक्षित तरीके से मनाएं।

फेस ऑथेंटिकेशन से डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र जमा कराए पेंशनभोगी : संजय फोगाट

जिला कोषाधिकारी संजय फोगाट ने जिलाभर के पेंशनभोगियों से किया आह्वान

झज्जर, 06 नवंबर। जिलाभर के ऐसे पेंशनभोगी जो जिला खजाना कार्यालय से पेंशन प्राप्त कर रहे हैं। वे स्मार्टफोन के माध्यम से फेस ऑथेंटिकेशन सुविधा का उपयोग कर अपना डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र जमा करवा सकते हैं। यह आह्वान जिला खजाना अधिकारी संजय फोगाट ने पेंशनभोगियों से किया है। उन्होंने बताया कि सरकार की ओर से पेंशनभोगियों की सुविधा के लिए इस संबंध में विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य जीवन प्रमाण-पत्र जमा करवाने की प्रक्रिया को सरल, सुविधाजनक और परेशानी रहित बनाना है। डीटीओ ने बताया कि जिला के सभी सहायक कोषाधिकारियों और पेंशन संबंधी कार्य करने वाले कर्मचारियों को निर्देश दिए कि वे पेंशनभोगियों को फेस ऑथेंटिकेशन सुविधा के बारे में जागरूक करें और डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र तैयार करने व जमा करवाने में उन्हें हर संभव सहायता प्रदान करें। उन्होंने कहा कि स्मार्टफोन के जरिए फेस ऑथेंटिकेशन की सुविधा से पेंशनभोगियों को जीवन प्रमाण-पत्र जमा करवाने में काफी सहूलियत मिलेगी। इससे उन्हें इस कार्य के लिए अनावश्यक परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

पेंशनभोगियों से अभियान में भागीदारी की अपील

डीटीओ संजय फोगाट ने सभी पेंशनभोगियों से अपील की कि वे इस अभियान का लाभ उठाते हुए अपने स्मार्टफोन के माध्यम से फेस ऑथेंटिकेशन सुविधा अपनाएं और डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र जमा करवाएं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी अधिक से अधिक पेंशन भोगियों तक इस सुविधा की जानकारी पहुंचाने के निर्देश दिए, ताकि अभियान का लाभ पात्र लोगों तक पहुंच सके।

बाल महोत्सव के मंच पर बाल कलाकारों ने दिखाई प्रतिभा, रंगोली से रागिनी तक बिखेरे हुनर के रंग

चार दिवसीय जिला स्तरीय बाल महोत्सव का उत्साह और उमंग के साथ समापन
अंतिम दिन रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने मोहा मन
जिला बाल कल्याण अधिकारी सुरेखा हुड्डा ने बढ़ाया नन्हे कलाकारों का हौसला















परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 06 नवंबर।

स्थानीय बाल भवन में चार दिनों तक बच्चों की कल्पनाओं, कला और प्रतिभा का शानदार संगम देखने को मिला। किसी ने रंगों से आकर्षक रंगोली सजाई तो किसी ने रागिनी, समूह नृत्य और नाट्य प्रस्तुतियों से अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। मौका था डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में आयोजित चार दिवसीय जिला स्तरीय बाल महोत्सव-2026 का, जिसका शुक्रवार को उत्साहपूर्ण माहौल में समापन हुआ। महोत्सव के अंतिम दिन जिला बाल कल्याण अधिकारी सुरेखा हुड्डा ने विभिन्न प्रतियोगिताओं का अवलोकन कर बच्चों की हौसला अफजाई की और उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

प्रतियोगिताएं जीतने से ज्यादा जरूरी है प्रतिभा को पहचानना और निखारना

जिला बाल कल्याण अधिकारी सुरेखा हुड्डा ने कहा कि प्रत्येक बच्चे में कोई न कोई विशेष प्रतिभा जरूर होती है। बाल महोत्सव जैसे आयोजन बच्चों को अपनी छिपी हुई प्रतिभा को पहचानने और उसे मंच पर प्रदर्शित करने का अवसर देते हैं। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता में जीत हासिल करना निश्चित रूप से खुशी की बात है, लेकिन पूरे उत्साह, लगन और मेहनत के साथ भाग लेना भी अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। बच्चों को हार-जीत की चिंता किए बिना हर गतिविधि में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। ऐसे मंच बच्चों के आत्मविश्वास, रचनात्मकता और व्यक्तित्व विकास को नई दिशा देते हैं।

14 नवंबर को बाल दिवस समारोह में सम्मानित होंगे प्रतिभाशाली विद्यार्थी

जिला बाल कल्याण अधिकारी ने बताया कि विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को 14 नवंबर को आयोजित जिला स्तरीय बाल दिवस समारोह में सम्मानित किया जाएगा।

रंगोली, मेहंदी, रागिनी और नृत्य से सजा महोत्सव का अंतिम दिन

कार्यक्रम अधिकारी अक्षमा शर्मा ने बताया कि बाल महोत्सव में जिला के विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शुक्रवार को समापन दिवस पर रंगोली, स्केचिंग ऑन स्पॉट, मेहंदी, रागिनी, वन एक्ट प्ले, ग्रुप डांस, फैंसी ड्रेस, क्ले मॉडलिंग, भाषण, कलश सजावट और फन गेम सहित विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। बच्चों ने अपनी कलात्मक प्रतिभा, कल्पनाशीलता और मंचीय कौशल का शानदार प्रदर्शन किया। निर्धारित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सीधे राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा।

कार्यक्रम में मंच संचालन प्रवक्ता संजय शर्मा और प्रवक्ता कृष्ण वशिष्ठ संयुक्त रूप से किया। निर्णायक मंडल में शिक्षा विभाग की प्रवक्ता बबीता रानी, निशा रानी सहित बाल कल्याण परिषद के अधिकारी और स्टाफ सदस्य मौजूद रहे।

दिल्ली परिवहन विभाग संचालन शाखा की गलतियां पड़ रही जनता पर भारी

हो रहे बार बार जान माल के नुक्सान पर नुकसान, साकेत मेट्रो स्टेशन के सामने सैदुलाजाब जेडेक्स किआ शोरूम में आग, कई गाड़ियां जलीं, कई लोग बचाए गए - मौत की पुष्टि नहीं, कारण जांच में है

हो रहे बार बार जान माल के नुक्सान पर नुकसान
साकेत मेट्रो स्टेशन के सामने सैदुलाजाब जेडेक्स किआ शोरूम में आग, कई गाड़ियां जलीं, कई लोग बचाए गए – मौत की पुष्टि नहीं, कारण जांच में है

- प्रस्तुति : संपादकीय विभाग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

> संपादकीय चेतावनी: किसी भी आग की खबर में घायलों / मृतकों की संख्या, समय और कारण शुरुआती घंटों में बदलते रहते हैं। हम वही लिख रहे हैं जो आधिकारिक स्रोतों ने अब तक कहा है। अंतिम पुष्टि फायर विभाग की जांच रिपोर्ट से ही होगी।

मुख्य तथ्य - एक दृष्टि में

- स्थान: जेडेक्स किआ - साकेत, प्लॉट पी2, महरौली-बदरपुर रोड, सैदुलाजाब, सैयद उल अजाइब गांव, साकेत मेट्रो स्टेशन के सामने, नई दिल्ली

- घटना: किआ कार शोरूम में भीषण आग, कई नई गाड़ियां जलकर खाक

- नुकसान: कई वाहन जले, करोड़ों रुपये के नुकसान की प्रारंभिक सूचना

- बचाव: शुरुआती रिपोर्ट में 2 लोगों को बचाया गया, बाद में जिलाधिकारी के अनुसार 12 से 15 लोगों को बचाया गया

- घायल: 7 लोग घायल, 4 मैक्स अस्पताल, 3 मदन मोहन मालवीय अस्पताल में भर्ती

- मृत्यु: अब तक किसी की मौत की पुष्टि नहीं हुई है

- आग की स्थिति: आग बुझा दी गई, कूलिंग ऑपरेशन जारी था

- कारण: प्रारंभिक अनुमान शॉर्ट सर्किट बताया गया, लेकिन फायर विभाग के अनुसार कारण अभी जांच में है।

1. क्या हुआ? - घटनाक्रम शुक्रवार, 6 नवंबर 2026 को दक्षिण दिल्ली के सैदुलाजाब इलाके में साकेत मेट्रो स्टेशन के सामने स्थित बड़े किआ शोरूम में आग लग गई।

दिल्ली फायर सर्विस के अनुसार शोरूम में आग की सूचना मिली और 10 फायर टेंडर मौके पर भेजे गए।

आग इतनी भीषण थी कि पूरी इमारत में काला धुआं फैल गया। आसपास की इमारतों से लोगों को सीढ़ियों की मदद से बचाया गया। कुछ लोगों ने जान बचाने के लिए इमारत से नीचे छलांग लगाने की भी कोशिश की, जिससे वे घायल हुए।

दिल्ली पुलिस और फायर विभाग की कई टीमें मौके पर मौजूद रहीं। इमारत में कोई और फंसा तो नहीं है, इसके लिए पूरी तलाशी ली गई।

2. समय को लेकर भ्रम - जिलाधिकारी लक्ष्य सिंघल के हवाले से कहा गया कि सुबह करीब 3:45 बजे सूचना मिली कि साकेत मेट्रो स्टेशन के सामने स्थित किआ शोरूम में आग लग गई है।

दूसरे स्रोत में: दिल्ली फायर सर्विस के हवाले से कहा गया कि दोपहर 3:47 बजे आग की सूचना मिली और 10 फायर टेंडर भेजे गए। एक अन्य समाचार में शाम करीब 4 बजे आग लगने की बात कही गई।

संपादकीय निष्कर्ष: यह संभव है कि एक रिपोर्ट में सुबह / दोपहर का समय गलत छपा हो, या एएम / पीएम में गलती हुई हो।

पक्का है: 6 नवंबर 2026 को सैदुलाजाब में किआ शोरूम में आग लगी। दिन और स्थान पक्का है, समय आधिकारिक फायर विभाग की लॉग बुक ही अंतिम सत्य होगी।

3. घायल, बचाए गए और मौत - क्या सही है? 2 लोगों को बचाया गया है, बाद में दक्षिण दिल्ली के जिलाधिकारी लक्ष्य सिंघल ने कहा - अब तक 7 लोग घायल हुए हैं, 4 को मैक्स अस्पताल और 3 को मदन मोहन मालवीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। 12 से 15 लोगों को बचाया गया है। अभी तक किसी की मौत की खबर नहीं है।

4. आग का कारण क्या है? - शॉर्ट सर्किट या जांच बाकी? जिलाधिकारी के अनुसार ऐसा लगता है कि आग शॉर्ट सर्किट की वजह से लगी वहीं दिल्ली फायर सर्विस के अनुसार आग का कारण अभी पता नहीं चला है, जांच जारी है।

संपादकीय व्याख्या: शॉर्ट सर्किट अभी प्रारंभिक अनुमान है, अंतिम कारण नहीं। शोरूम में बड़ी संख्या में इलेक्ट्रिक वायरिंग, बैटरी, फ्यूल, टायर, पेंट और प्लास्टिक होता है। एक बार आग लगने पर वह तेजी से फैलती है।

कारण जानने के लिए फॉरेंसिक जांच, वायरिंग की जांच, सीसीटीवी फुटेज और इमारत का फायर सेफ्टी ऑडिट जरूरी है। इसलिए अभी यह नहीं कहा जा सकता की आग जानबूझकर लगाई गई, या किसी की लापरवाही से लगी। यह जांच का विषय है।



5. यह घटना क्यों महत्वपूर्ण है?

- सिर्फ एक शोरूम की आग नहीं

क. उसी दिन दूसरी आग - करोल बाग, गफ्फार मार्केट उसी दिन करोल बाग के गफ्फार मार्केट में पुरी प्लाजा में भी भीषण आग लगी, जहां 22 फायर टेंडर भेजे गए। वहां मोबाइल बैटरी के ओवरहीट होने का प्रारंभिक अनुमान बताया गया।

एक ही दिन में दो बड़ी व्यावसायिक आग की घटनाएं दिल्ली में फायर सेफ्टी व्यवस्था पर सवाल उठाती हैं।

ख. एमजी रोड पर ट्रैफिक और सुरक्षा साकेत मेट्रो स्टेशन के सामने एमजी रोड दिल्ली की सबसे व्यस्त सड़कों में से एक है। शोरूम में आग लगने पर ट्रैफिक जाम, धुआं, अफरातफरी और बचाव कार्य में बाधा - यह सब एक साथ होता है।

ग. शोरूम की फायर सेफ्टी

* क्या शोरूम में फायर एनओसी थी?

* क्या स्प्रिंकलर, अलार्म, इमरजेंसी एग्जिट, फायर एक्सटिंग्विशर काम कर रहे थे?

* क्या गाड़ियों की बैटरी / फ्यूल को लेकर सुरक्षा मानकों का पालन हुआ?

ये सवाल जांच में पूछे जाने चाहिए क्योंकि दिल्ली परिवहन विभाग जिसका मूल दायित्व है इन सभी बातों की जांच करने के बाद ट्रेड सर्टिफिकेट प्रदान करना वह अपना दायित्व निभाने में जीरो है कारण वह ही ज्यादा जानते होंगे क्योंकि इस के प्रति पहले भी लिखित शिकायत परिवहन आयुक्त का दी गई है पर रिजल्ट शून्य

6. संपादकीय मांग - पांच ठोस बिंदु

1. फायर विभाग की जांच रिपोर्ट सार्वजनिक हो: शोरूम में आग का कारण, फायर एनओसी की स्थिति, और सुरक्षा में कमी की रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए।

2. घायलों का इलाज और मुआवजा सुनिश्चित हो: घायलों का इलाज सरकारी खर्च पर हो, और यदि सुरक्षा में लापरवाही पाई जाए तो नियमानुसार मुआवजा मिले।

3. सभी कार शोरूम का फायर ऑडिट हो: दिल्ली के सभी बड़े कार शोरूम, सर्विस सेंटर और गोदामों का तत्काल फायर सेफ्टी ऑडिट हो।

4. एमजी रोड पर इमरजेंसी लेन खाली रहे: आग लगने पर फायर टेंडर को रास्ता देने के लिए एमजी रोड पर इमरजेंसी कॉरिडोर की व्यवस्था हो।

संपादकीय टिप्पणी सैदुलाजाब की आग ने एक बार फिर याद दिलाया - दिल्ली में आग बुझाने की व्यवस्था है, लेकिन आग लगने से रोकने की व्यवस्था कमजोर है।

हम फायर कर्मियों, पुलिस और स्थानीय लोगों को सलाम करते हैं, जिन्होंने जान जोखिम में डालकर 12 से 15 लोगों को बचाया।

लेकिन सवाल यही है - जब तक हर शोरूम, हर बाजार, हर इमारत में फायर सेफ्टी का पालन नहीं होगा, तब तक हर दिन किसी न किसी गफ्फार मार्केट या साकेत में आग लगती रहेगी।

आग की खबर को सिर्फ ब्रेकिंग न्यूज मत समझिए - इसे चेतावनी समझिए।

- संजय कुमार बाठला,
प्रधान संपादक

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - ब्रेकिंग - विधि संवाददाता - दिल्ली

दिल्ली हाईकोर्ट का बड़ा फैसला - NCR के वकीलों को BS-6 नियम से छूट, कोर्ट स्टाफ को भी राहत

छूट केवल कोर्ट के कामकाजी दिनों में लागू होगी – न्याय तक पहुंच को अनुच्छेद 14 और 21 का हिस्सा बताते हुए बार एसोसिएशन की याचिका पर जस्टिस अमित महाजन का आदेश | विस्तृत आदेश का इंतजार

प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता
परिवहन विशेष समाचार पत्र

नई दिल्ली - दिल्ली उच्च न्यायालय ने शुक्रवार, 6 नवंबर 2026 को एक महत्वपूर्ण आदेश में कहा कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) में रहने वाले अधिवक्ताओं और न्यायिक स्टाफ को दिल्ली के बाहर रजिस्टर्ड गैर-BS-6 वाहनों पर लगी रोक से छूट मिलेगी। यह छूट केवल कोर्ट के कामकाजी दिनों में लागू होगी।

तथ्य एक नज़र में – बिंदु – विवरण

मामला Delhi High Court Bar Association v. Government of NCT of Delhi

आदेश की तारीख 6 नवंबर 2026, शुक्रवार

पीठ जस्टिस अमित महाजन

याचिकाकर्ता दिल्ली हाईकोर्ट बार एसोसिएशन (DHCBA)

याचिकाकर्ता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता एन. हरिहरन, अध्यक्ष DHCBA, अधिवक्ता अमित चौधरी के माध्यम से

किसे छूट NCR में रहने वाले अधिवक्ता + न्यायिक / कोर्ट स्टाफ

किस पर छूट दिल्ली के बाहर रजिस्टर्ड, प्री-BS-6 / BS-6 मानक पूरे न करने वाले वाहन

छूट कब केवल कोर्ट के कामकाजी दिनों में

मूल रोक दिल्ली सरकार, पर्यावरण एवं वन विभाग की अधिसूचना 23 जून 2026

रोक की अवधि 1 नवंबर 2026 से 31 जनवरी 2027 तक

विस्तृत आदेश अभी आना बाकी है

मुख्य बिंदु

1. रोक क्या थी? प्रदूषण को देखते हुए दिल्ली सरकार ने 23 जून 2026 को फैसला लिया था कि 1 नवंबर से 31 जनवरी तक BS-6 उत्सर्जन मानकों को पूरा नहीं करने वाले दिल्ली के बाहर के सभी मोटर वाहनों को दिल्ली में प्रवेश की अनुमति नहीं होगी।

2. याचिका क्यों दायर हुई? DHCBA ने मांग की थी कि NCR में रहने वाले और bona fide पेशेवर काम के लिए दिल्ली आने वाले वकीलों के वाहनों को इस प्रतिबंध से छूट दी जाए।

3. कौन-कौन प्रभावित थे? बड़ी संख्या में वकील गुरुग्राम, फरीदाबाद, नोएडा और गाजियाबाद जैसे NCR इलाकों से दिल्ली की अदालतों में आते हैं। वे कोर्ट में पेशी, मुवक्किलों से मुलाकात, सीनियर से सलाह और चैंबर के काम के लिए रोज आते-जाते हैं।

4. कोर्ट का तर्क क्या था? वकील और न्यायिक स्टाफ Essential / Judicial Functions करते हैं। अगर वे कोर्ट नहीं पहुंच सके, तो न्याय वितरण की पूरी व्यवस्था प्रभावित होगी और मुवक्किलों का नुकसान होगा।

5. संवैधानिक आधार याचिका में सुप्रीम कोर्ट के अनिता कुशवाहा बनाम पुष्प सुदान मामले का जिक्र किया गया, जिसमें न्याय तक पहुंच को संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता) और अनुच्छेद 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता) का हिस्सा माना गया है।

विस्तृत विवरण – सुनवाई में क्या हुआ?

DHCBA का पक्ष: वरिष्ठ अधिवक्ता एन. हरिहरन ने कहा कि सरकार की अधिसूचना में ही कुछ श्रेणियों के वाहनों को छूट देने का प्रावधान पहले से मौजूद है। अधिसूचना पर्यावरण विभाग को अतिरिक्त श्रेणियों को छूट देने की शक्ति देती है। इसलिए वकीलों के लिए भी अलग से छूट पर विचार किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान भी वकीलों को पहचान पत्र दिखाकर कोर्ट के काम के लिए यात्रा की अनुमति दी गई थी। 2021 के दिल्ली हाईकोर्ट के आदेश का भी हवाला दिया गया।

रेगुलेटेड छूट का प्रस्ताव: DHCBA ने ब्लैंकेट छूट नहीं मांगी। उसने प्रस्ताव दिया कि:

- हर योग्य अधिवक्ता को एक नॉमिनेटेड वाहन इस्तेमाल करने की अनुमति मिले
- पेशेवर पहचान पत्र का सत्यापन हो
- वाहन के कागज जांचे जाएं
- वैध PUCC - Pollution Under Control Certificate अनिवार्य हो

पर्यावरण का सम्मान: याचिका में साफ कहा गया कि DHCBA पर्यावरण नियमों से पूरी छूट नहीं मांग रहा है, न ही GRAP (Graded Response Action Plan) या किसी बाध्यकारी न्यायिक आदेश से छूट मांग रहा है। याचिका में कहा गया - साफ हवा जरूरी है, लेकिन न्याय तक पहुंच भी उतनी ही जरूरी है।

कोर्ट का आदेश: सुनवाई के बाद जस्टिस अमित महाजन ने NCR में रहने वाले अधिवक्ताओं और न्यायिक स्टाफ को छूट दी। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि यह छूट केवल कोर्ट के कामकाजी दिनों में लागू होगी। विस्तृत आदेश अभी आना बाकी है, जिसमें छूट की शर्तें और प्रक्रिया स्पष्ट होगी।

इस फैसले का क्या मतलब है? - आम आदमी के लिए

1. वकीलों के लिए राहत: NCR से आने वाले वकील अब कोर्ट के दिनों में अपने पुराने वाहन से दिल्ली आ सकेंगे, बशर्ते विस्तृत आदेश की शर्तें पूरी करें।

2. मुवक्किलों के लिए राहत: वकील समय पर कोर्ट पहुंचेंगे तो सुनवाई टलेगी नहीं, केस में देरी नहीं होगी।

3. कोर्ट स्टाफ के लिए राहत: न्यायिक कर्मचारी भी इसी छूट के दायरे में आएंगे, जिससे कोर्ट का रोज का काम सुचारू रहेगा।

4. आम जनता के लिए कोई बदलाव नहीं: यह छूट आम जनता के लिए नहीं है। आम वाहनों पर 1 नवंबर से 31 जनवरी तक की रोक पूर्ववत लागू रहेगी।

जनहित संदेश - सावधान रहें

1. विस्तृत आदेश का इंतजार करें: अभी केवल मौखिक / संक्षिप्त आदेश आया है। कागज, पहचान पत्र, PUCC और नॉमिनेटेड वाहन की शर्तें विस्तृत आदेश से ही तय होंगी।

2. PUCC जरूर रखें: वैध प्रदूषण प्रमाणपत्र के बिना छूट का दावा न करें।

3. GRAP के नियम अलग हैं: GRAP के तहत सख्ती होने पर अलग आदेश लागू हो सकते हैं।

4. फर्जी पहचान से बचें: फर्जी बार ID या कागज दिखाना दंडनीय हो सकता है।

संपादकीय निष्कर्ष यह फैसला पर्यावरण और न्याय - दोनों के बीच संतुलन का प्रयास है। प्रदूषण रोकना जरूरी है, लेकिन न्याय की गाड़ी भी रुकनी नहीं चाहिए। कोर्ट ने सीमित, नियंत्रित और केवल कामकाजी दिनों की छूट देकर यही संतुलन साधा है।

अब सबकी नजर विस्तृत आदेश पर है, जिसमें यह साफ होगा कि छूट कैसे, किस प्रमाण से और किस प्रक्रिया से मिलेगी।

जनहित अपील: वकील साथी विस्तृत आदेश आने तक संयम रखें, सभी कागज पूरे रखें और प्रदूषण कम करने के लिए जहां संभव हो, सार्वजनिक परिवहन, कारपूलिंग और BS-6 वाहनों को प्राथमिकता दें।

स्रोत: दिल्ली हाईकोर्ट में सुनवाई की रिपोर्ट्स, बार एंड बेंच, PTI, आज तक, पत्रिका के आधार पर। विस्तृत आदेश आने पर शर्तों में बदलाव संभव है, कृपया आधिकारिक आदेश से पुष्टि करें।



राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन ने सौंपा ज्ञापन: 12 नवंबर से 'स्टेयरिंग छोड़ो अभियान' का आह्वान

सिवनी/छपारा/लखनादौन:

राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन (आर.सी.एस.एस. ड्राइवर सेवा एसोसिएशन) द्वारा ड्राइवरों की मांगों और समस्याओं को लेकर आगामी 12 नवंबर 2026 से 'स्टेयरिंग छोड़ो अभियान' चलाने की घोषणा की गई है। इस संबंध में संगठन के प्रतिनिधियों ने सिवनी कलेक्ट्रेट कार्यालय, छपारा थाना और लखनादौन थाना में प्रशासनिक अधिकारियों को ज्ञापन प्रस्तुत किया है।

संगठन के संस्थापक/संपादक संत कुमार बंजारा एवं अन्य पदाधिकारियों (मनीष कुशवाहा, दिनेश रजक और सतीश पटेल) ने बताया कि ज्ञापन सौंपकर प्रशासन को आगामी शांतिपूर्ण आंदोलन से अवगत करा दिया गया है।

सभी ड्राइवर भाइयों से शांतिपूर्ण सहयोग की अपील

राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन की ओर से सभी ड्राइवर भाइयों से विनम्र अपील की गई है कि:

* 12 नवंबर 2026 के बाद से कोई भी ड्राइवर वाहन न चलाएं और शांतिपूर्ण तरीके से 'स्टेयरिंग छोड़ो अभियान' में अपना समर्थन दें।

* ड्राइवर भाई चाहें तो अपने-अपने घरों पर रहकर या लखनादौन (बमहोड़ी आउटर ब्रिज) के पास आयोजित शांतिपूर्ण स्थल पर पहुंचकर संगठन का सहयोग कर सकते हैं।

* संगठन ने स्पष्ट किया है कि यह आंदोलन पूरी तरह से शांतिपूर्ण और समझाइश पर आधारित रहेगा, किसी के साथ कोई जोर-जबरदस्ती नहीं की जाएगी।

जय हिंद - जय सारथी
निवेदक:
संत कुमार बंजारा एवं समस्त पदाधिकारी
राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन (आर.सी.एस.एस. ड्राइवर सेवा एसोसिएशन, म.प्र.)




Reg. No. 0711350
जय हिन्द जय सारथी...
आर.सी.एस.एस. ड्राइवर सेवा एसोसिएशन म.प्र.
सारथी एकता मिशन
सफलता के लिए एकता जरूरी है
हेड ऑफिस- 2286 जार्ज डिसिल्वा वार्ड, स्लीपी मोहल्ला गोरखपुर जबलपुर, म.प्र., मो.: 9479833221, 9399452910
Serial No.125, ज्ञापन / मांग पत्र
प्रति,
माननीय कलेक्टर महोदय,
सिवनी, सिवनी जिला मध्य प्रदेश
विषय: देश के ड्राइवरों के हित में ड्राइवर सुरक्षा कानून, ड्राइवर आयोग एवं ड्राइवर वेलफेयर बोर्ड के गठन हेतु मांग एवं प्रस्तावित आंदोलन की सूचना।
माननीय महोदय जी,
सादर निवेदन है कि देश के करोड़ों ड्राइवर दिन-रात अपनी सेवाएं देकर देश की परिवहन व्यवस्था एवं अर्थव्यवस्था को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके बावजूद ड्राइवरों की सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा एवं कल्याण से संबंधित अनेक समस्याओं का आज भी समुचित समाधान नहीं हो पाया है।
राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन (RCSS Driver Seva Association) द्वारा राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार को समय-समय पर अनेक ज्ञापन देकर ड्राइवर भाइयों की समस्याओं एवं मांगों से अवगत कराया गया है, किंतु हमारी जानकारी के अनुसार इन मांगों पर अपेक्षित जवाब एवं ठोस कार्रवाई प्राप्त नहीं हुई है। इसी प्रकार देश के विभिन्न राज्यों के अनेक ड्राइवर संगठनों द्वारा भी अपनी समस्याओं एवं मांगों को सरकार के समक्ष ज्ञापन के माध्यम से रखा जा चुका है।
लगातार ज्ञापन एवं निवेदन के बावजूद अपेक्षित पहल नहीं होने से देश के विभिन्न ड्राइवर संगठनों ने एकजुट होकर आल इंडिया ड्राइवर ज्वाइंट कमेटी का गठन किया है तथा ड्राइवरों के हित में निम्न प्रमुख मांगों को सरकार के समक्ष रखा है:-
प्रमुख मांगें:
- ड्राइवर सुरक्षा कानून बनाया जाए।
- राष्ट्रीय ड्राइवर आयोग का गठन किया जाए।
- ड्राइवर वेलफेयर बोर्ड का गठन किया जाए।
- कमर्शियल ड्राइवरों के लिए प्रभावी सामाजिक सुरक्षा, बीमा एवं दुर्घटना सहायता की व्यवस्था की जाए।
अतः हमारी कमेटी सरकार से अनुरोध करती है कि 12 नवंबर 2026 से पूर्व उपरोक्त प्रमुख मांगों पर ठोस एवं सकारात्मक निर्णय लेकर ड्राइवरों को उचित राहत प्रदान की जाए।
यदि 12 नवंबर 2026 तक ड्राइवर सुरक्षा कानून, ड्राइवर आयोग एवं ड्राइवर वेलफेयर बोर्ड के गठन की दिशा में ठोस निर्णय नहीं लिया जाता है, तो देश के विभिन्न ड्राइवर संगठन एवं राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन (RCSS Driver Seva Association), आल इंडिया ड्राइवर ज्वाइंट कमेटी के बैनर तले 12 नवंबर 2026 से अनिश्चितकालीन स्टीयरिंग छोड़ अभियान प्रारंभ करने के लिए बाध्य होंगे। इससे उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों एवं परिणामों की जवाबदेही संबंधित सरकार की होगी।
हम आशा करते हैं कि माननीय सरकार ड्राइवर समुदाय की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए समय रहते आवश्यक निर्णय करेगी।
RCSS Driver Seva Association
राष्ट्रवादी चालक सेवा संगठन
(RCSS Driver Seva Association)
एवं सदस्य, मो. 947

दीपावली केवल त्योहार नहीं, अपनों के मिलन का नाम है: जहाँ अपने हों, वहीं दीपावली है



● डॉ. विजय गर्ग

हमारे जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति हमारे अपने होते हैं। पैसा, बड़े घर, महँगे कपड़े और शानदार सजावट कुछ समय के लिए खुशी दे सकते हैं, लेकिन मन को वास्तविक सुकून अपनों की उपस्थिति से मिलता है। जब घर में माता-पिता का आशीर्वाद, बच्चों की किलकारियाँ, भाई-बहनों की हँसी और बुजुर्गों के अनुभवों की खुशबू होती है, तो साधारण-सा घर भी स्वर्ग से कम नहीं लगता।



डॉ. विजय गर्ग

दीपावली भारतीय संस्कृति का एक ऐसा त्योहार है, जिसका नाम सुनते ही मन में रोशनी, खुशियाँ, मिठास, प्रेम और अपनत्व की भावना जाग उठती है। सामान्यतः दीपावली को दीप जलाने, घर सजाने, मिठाइयाँ बाँटने और पटाखे चलाने का त्योहार माना जाता है, लेकिन इसकी वास्तविक सुंदरता इन बाहरी परंपराओं से कहीं अधिक है। दीपावली वास्तव में अपने परिवार, रिश्तेदारों, मित्रों और प्रियजनों से मिलने, साथ बैठने और खुशियाँ बाँटने का त्योहार है।

हमारे जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति हमारे अपने होते हैं। पैसा, बड़े घर, महँगे कपड़े और शानदार सजावट कुछ समय के लिए खुशी दे सकते हैं, लेकिन मन को वास्तविक सुकून अपनों की उपस्थिति से मिलता है। जब घर में माता-पिता का आशीर्वाद, बच्चों की किलकारियाँ, भाई-बहनों की हँसी और बुजुर्गों के अनुभवों की खुशबू होती है, तो साधारण-सा घर भी स्वर्ग से कम नहीं लगता।

आज की तेज रफ्तार जिंदगी ने मनुष्य को बहुत व्यस्त कर दिया है। नौकरी, व्यवसाय, पढ़ाई और अन्य जिम्मेदारियों के कारण परिवार के सदस्यों के पास एक-दूसरे के लिए समय कम रह गया है। कई बार एक ही घर में रहने वाले लोग भी मोबाइल फोन और अपने कामों में इतने व्यस्त रहते हैं कि उनके पास आपस में बातचीत करने का समय नहीं होता। ऐसे में दीपावली हमें रुककर अपने रिश्तों की ओर फिर से देखने का अवसर देती है।

यह त्योहार हमें याद दिलाता है कि रिश्तों को जीवित रखने के लिए समय, स्नेह और संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है। वर्षों से दूर रह रहे रिश्तेदारों से मिलना, पुराने मित्रों से बातचीत करना, नाराज अपनों को मनाना और बुजुर्गों के पास बैठकर उनका हालचाल पूछना भी दीपावली मनाने का एक सुंदर तरीका है।

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हर व्यक्ति की दीपावली एक जैसी नहीं होती। किसी घर में नए कपड़े और मिठाइयाँ आती हैं, जबकि किसी गरीब परिवार के लिए दो समय की रोटी जुटाना भी मुश्किल होता है। किसी बुजुर्ग की दीपावली बच्चों की प्रतीक्षा में गुजर जाती है और किसी अकेले व्यक्ति के लिए त्योहार का दिन भी सामान्य दिन जैसा होता है। ऐसे लोगों के साथ खुशियाँ बाँटना ही त्योहार की वास्तविक सार्थकता है।

दीपावली हमें यह संदेश भी देती है कि रोशनी केवल घरों में ही नहीं, बल्कि दिलों में भी होनी चाहिए। यदि हमारे मन में ईर्ष्या, नफरत, क्रोध और अहंकार है, तो हजारों दीप जलाने के बावजूद जीवन में अंधकार रह सकता है। इसलिए हमें अपने मन में प्रेम, क्षमा, सहनशीलता और दूसरों के प्रति सम्मान के दीप जलाने चाहिए।

इस अवसर पर हमें बुजुर्गों का आशीर्वाद लेना चाहिए, बच्चों को पारिवारिक मूल्यों से जोड़ना चाहिए और युवाओं को रिश्तों का महत्व समझाना चाहिए। उपहारों की कीमत से अधिक उनके पीछे छिपा प्रेम मायने रखता है। किसी को दिया गया थोड़ा-सा समय, प्रेम भरा शब्द या मुस्कान भी महँगे उपहारों से अधिक मूल्यवान हो सकती है।

हमें यह भी प्रयास करना चाहिए कि दीपावली पर्यावरण के अनुकूल तरीके से मनाई जाए। मिट्टी के दीपक जलाकर, बिजली की अनावश्यक खपत कम करके, पटाखों से परहेज करके और जरूरतमंदों की सहायता करके हम इस त्योहार को और भी अर्थपूर्ण बना सकते हैं।

अंत में, दीपावली का वास्तविक अर्थ महँगी सजावट, बड़ी पार्टियों या दिखावे में नहीं, बल्कि प्रेम, मेल-मिलाप, सम्मान और अपनत्व में छिपा हुआ है। यदि परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर हँसें, बातचीत करें और एक-दूसरे की खुशियों का हिस्सा बनें, तो एक साधारण-सा दीपक भी जीवन को रोशन कर सकता है।

क्योंकि दीपावली की वास्तविक रौनक दीपों की संख्या से नहीं, बल्कि अपनेपन की गर्माहट से मापी जाती है। सच तो यह है कि जहाँ अपने होते हैं, वहीं दीपावली होती है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य। शिक्षाविद् एवं प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद,



नशे से दूर, सपनों के करीब: नशामुक्त जीवन की ताकत

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल। शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात वैज्ञानिक

मनुष्य का जीवन अनमोल है। हर व्यक्ति के मन में कुछ सपने होते हैं—अच्छी शिक्षा प्राप्त करना, अपने पैरों पर खड़ा होना, परिवार को खुश रखना, समाज में सम्मान अर्जित करना और जीवन में कुछ सार्थक करना। लेकिन नशे की लत इन सपनों के रास्ते में एक बड़ी बाधा बन सकती है। नशा धीरे-धीरे व्यक्ति की शारीरिक शक्ति, मानसिक क्षमता, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक संबंधों और आत्मविश्वास को कमजोर कर देता है। इसके विपरीत, नशामुक्त जीवन व्यक्ति को अपनी क्षमताओं को पहचानने और अपने सपनों को साकार करने का अवसर देता है।

नशे से दूर रहना केवल एक बुरी आदत से बचना नहीं, बल्कि अपने भविष्य की रक्षा करना है।

नशे की शुरुआत कैसे होती है?

नशे की लत अक्सर अचानक नहीं लगती। कई बार इसकी शुरुआत दोस्तों के दबाव, जिज्ञासा, तनाव, अकेलेपन या किसी समस्या से बचने की कोशिश के रूप में होती है। कुछ युवा केवल यह सोचकर नशा आजमाते हैं कि इससे वे अधिक आत्मविश्वासी दिखाई देंगे या उन्हें कुछ समय के लिए मानसिक राहत मिलेगी। लेकिन धीरे-धीरे यही प्रयोग आदत और फिर गंभीर समस्या का रूप ले सकता है।

कई लोग तनाव, असफलता, बेरोजगारी या पारिवारिक समस्याओं से बचने के लिए नशे का सहारा लेते हैं। उन्हें लगता है कि नशा उनकी परेशानियों को कम कर देगा, लेकिन वास्तव में यह समस्याओं को और जटिल बना सकता है। वास्तविक समाधान समस्याओं का सामना करने, सही मार्गदर्शन लेने और स्वस्थ तरीके से तनाव का प्रबंधन करने में है।

नशा कैसे कमजोर करता है हमारी क्षमताएँ?

नशे का प्रभाव केवल शरीर तक सीमित नहीं रहता। यह व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता, निर्णय लेने की योग्यता, याददाश्त और भावनात्मक संतुलन को भी प्रभावित कर सकता है। नशे की समस्या बढ़ने पर पढ़ाई, कामकाज और दैनिक जिम्मेदारियों को निभाना कठिन हो सकता है।

एक विद्यार्थी, जो कभी डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक या अधिकारी बनने का सपना देखता था, नशे की गिरफ्त में आकर अपनी पढ़ाई और भविष्य की योजनाओं से दूर हो सकता है। एक मेहनती कर्मचारी अपनी कार्यक्षमता खो सकता है। परिवार का जिम्मेदार सदस्य अपने प्रियजनों के प्रति जिम्मेदारियाँ निभाने में कठिनाई महसूस कर सकता है।

नशा व्यक्ति का समय, धन, स्वास्थ्य और आत्मविश्वास छीन सकता है। इसलिए नशे से बचना केवल स्वास्थ्य संबंधी निर्णय नहीं, बल्कि अपनी संभावनाओं को सुरक्षित रखने का संकल्प भी है।

युवावस्था: सपनों को साकार करने का समय

युवावस्था जीवन का वह चरण है, जब व्यक्ति के पास ऊर्जा, उत्साह, सीखने की क्षमता और नए अवसरों की तलाश करने का समय होता है। यही वह समय है, जब अच्छी आदतें भविष्य की मजबूत नींव बनाती हैं।

युवाओं को समझना चाहिए कि वास्तविक साहस दूसरों के दबाव में आकर गलत रास्ता चुनने में नहीं, बल्कि अपने विवेक के अनुसार सही निर्णय लेने में है। यदि कोई मित्र नशा करने के लिए दबाव डालता है, तो स्पष्ट रूप से मना करना कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और आत्मविश्वास का संकेत है।

खेलकूद, संगीत, पुस्तकें, रचनात्मक गतिविधियाँ, सामाजिक सेवा और कौशल विकास युवाओं को सकारात्मक दिशा प्रदान कर सकते हैं। इन गतिविधियों से न केवल समय का सदुपयोग होता है, बल्कि जीवन में उद्देश्य और संतुष्टि की भावना भी विकसित होती है।

तनाव का समाधान नशा नहीं है

आज विद्यार्थियों और युवाओं पर पढ़ाई, प्रतियोगी परीक्षाओं, रोजगार और सामाजिक अपेक्षाओं का दबाव बढ़ रहा है। ऐसे में कुछ लोग तनाव से राहत पाने के लिए नशे की ओर आकर्षित हो सकते हैं। लेकिन नशा समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं है।

तनाव से निपटने के लिए नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद, संतुलित भोजन, ध्यान, योग, प्रकृति के साथ समय बिताना और प्रियजनों से बातचीत करना उपयोगी हो सकता है। आवश्यकता पड़ने पर मनोवैज्ञानिक या अन्य योग्य स्वास्थ्य विशेषज्ञ की सहायता लेना भी समझदारी है।

हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि मदद माँगना कमजोरी नहीं है। अपनी समस्या को पहचानना और उसके समाधान के लिए कदम उठाना ही वास्तविक साहस है।

परिवार की भूमिका

परिवार बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माता-पिता का स्नेह, संवाद, अनुशासन और सही मार्गदर्शन बच्चों को गलत आदतों से बचाने में सहायता कर सकता है।

माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों की समस्याओं को ध्यान से सुनें, उनकी भावनाओं का सम्मान करें और उन्हें अपनी बात खुलकर कहने का अवसर दें। केवल डाँटना, अपमानित करना या दूसरों से तुलना करना कई बार बच्चों को परिवार से दूर कर सकता है।

यदि किसी परिवार के सदस्य को नशे की समस्या है, तो उसे अपराधी की तरह देखने के बजाय समस्या को समझना और उपचार के लिए प्रोत्साहित करना अधिक उपयोगी है। परिवार का सहयोग, चिकित्सकीय सहायता और पुनर्वास की उचित व्यवस्था सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं।

शिक्षक और समाज की जिम्मेदारी

शिक्षक केवल विषयों का ज्ञान नहीं देते, बल्कि विद्यार्थियों के चरित्र, दृष्टिकोण और जीवन-मूल्यों के निर्माण में भी योगदान करते हैं। विद्यालयों और महाविद्यालयों में नशे के दुष्प्रभावों पर जागरूकता कार्यक्रम, परामर्श सत्र, खेल गतिविधियाँ और जीवन-कौशल प्रशिक्षण आयोजित किए जाने चाहिए।

समाज को भी नशे की समस्या से निपटने के लिए सामूहिक प्रयास करने होंगे। युवाओं के लिए खेल मैदान, पुस्तकालय, कौशल प्रशिक्षण केंद्र और रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम उपलब्ध कराना सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

नशे की समस्या से जूझ रहे लोगों का मजाक उड़ाना या उन्हें सामाजिक रूप से अलग कर देना उचित नहीं है। नशे की लत एक जटिल स्वास्थ्य समस्या हो सकती है, जिसके लिए उचित उपचार, परामर्श और निरंतर सहयोग की आवश्यकता होती है।

नशा और स्वास्थ्य

नशीले पदार्थों का सेवन शरीर के विभिन्न अंगों को नुकसान पहुँचा सकता है। पदार्थ के प्रकार, सेवन की मात्रा और अवधि के अनुसार इसके प्रभाव अलग-अलग हो सकते हैं। कुछ नशीले पदार्थ हृदय, यकृत, फेफड़ों और मस्तिष्क को प्रभावित कर सकते हैं। इनसे दुर्घटनाओं, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और पारिवारिक तनाव का जोखिम भी बढ़ सकता है।

नशे की लत से बाहर निकलने के लिए चिकित्सकीय सहायता लेना महत्वपूर्ण है। कुछ पदार्थों, विशेषकर शराब या कुछ दवाओं पर निर्भरता की स्थिति में अचानक सेवन बंद करना खतरनाक हो सकता है। इसलिए योग्य चिकित्सक की सलाह से सुरक्षित उपचार योजना बनानी चाहिए।

समय पर सहायता मिलने से व्यक्ति अपने स्वास्थ्य, संबंधों और जीवन की दिशा में सुधार की शुरुआत कर सकता है।

पंजाब के लिए विशेष संदेश

पंजाब की पहचान मेहनत, साहस, सेवा, कृषि, खेल और जीवंत संस्कृति से जुड़ी रही है। लेकिन नशे की समस्या ने अनेक परिवारों और युवाओं के जीवन को प्रभावित किया है। इस चुनौती से निपटने के लिए सरकार, शैक्षणिक संस्थानों, स्वास्थ्य सेवाओं, परिवारों और सामाजिक संगठनों को मिलकर काम करना होगा।

युवाओं को शिक्षा, रोजगार, खेल और उद्यमिता के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। नशे की तस्करी के विरुद्ध कानून का प्रभावी पालन होना चाहिए और नशे की लत से जूझ रहे लोगों को सुलभ उपचार तथा पुनर्वास की सुविधाएँ मिलनी चाहिए।

पंजाब का भविष्य उसके स्वस्थ, शिक्षित, जागरूक और आत्मनिर्भर युवाओं में निहित है। प्रत्येक युवा को यह समझना होगा कि उसकी प्रतिभा और मेहनत परिवार तथा समाज के लिए अनमोल हैं।

नशामुक्त जीवन के लिए व्यावहारिक कदम

* स्पष्ट संकल्प लें: नशे से दूर रहने और स्वस्थ जीवन अपनाने का निर्णय करें।
* गलत दबाव से बचें: नशे के लिए उकसाने वाले साथियों को दृढ़ता से मना करें।
* सकारात्मक दिनचर्या अपनाएँ: खेल, व्यायाम, पढ़ाई, रचनात्मक कार्य और पर्याप्त नींद को प्राथमिकता दें।
* समस्या साझा करें: तनाव या किसी परेशानी की स्थिति में परिवार, विश्वसनीय मित्र, शिक्षक या विशेषज्ञ से बात करें।
* समय पर सहायता लें: नशे की आदत विकसित होने पर चिकित्सकीय परामर्श और उपचार प्राप्त करें।
* दूसरों का सहयोग करें: नशे की समस्या से जूझ रहे लोगों के प्रति संवेदनशील रहें और उन्हें उचित सहायता लेने के लिए प्रेरित करें।
* अपने लक्ष्य याद रखें: अपने सपनों, परिवार और भविष्य को ध्यान में रखकर निर्णय लें।

सफलता का वास्तविक अर्थ

सफलता केवल धन कमाने, ऊँचा पद प्राप्त करने या समाज में प्रसिद्ध होने का नाम नहीं है। वास्तविक सफलता स्वस्थ शरीर, शांत मन, अच्छे संबंधों, आत्मसम्मान और उद्देश्यपूर्ण जीवन में भी दिखाई देती है।

नशामुक्त जीवन व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का बेहतर उपयोग करने, परिवार के प्रति जिम्मेदारियाँ निभाने और समाज में सकारात्मक योगदान देने का अवसर देता है। यह जीवन को अधिक सार्थक, संतुलित और संभावनाओं से भरपूर बना सकता है।

युवाओं को यह समझना चाहिए कि जीवन में कठिनाइयाँ आना स्वाभाविक है, लेकिन कठिनाइयों से निपटने के लिए ऐसे रास्ते चुनना आवश्यक है, जो भविष्य को बेहतर बनाएँ, न कि उसे कमजोर करें।

निष्कर्ष

नशे से दूर रहना जीवन के प्रति जिम्मेदार दृष्टिकोण अपनाने का प्रतीक है। यह अपने स्वास्थ्य, परिवार, शिक्षा, करियर और सपनों की रक्षा करने का संकल्प है। नशामुक्त समाज का निर्माण केवल कानूनों से नहीं, बल्कि जागरूकता, शिक्षा, संवेदनशीलता, उपचार और सामूहिक जिम्मेदारी से संभव है।

आइए, हम ऐसा समाज बनाने का प्रयास करें, जहाँ युवाओं की पहचान नशे से नहीं, बल्कि उनकी प्रतिभा, मेहनत, चरित्र और उपलब्धियों से हो। जहाँ हर बच्चे को सपने देखने और उन्हें साकार करने का अवसर मिले।

नशे से दूर रहना जीवन की संभावनाओं को सुरक्षित रखना है, और नशामुक्त जीवन अपनाना अपने सपनों को उड़ान देना है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल। शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात वैज्ञानिक गली कौर चंद,

पक्षी सर्दियों की ठंडी रातों में कैसे जीवित रहते हैं? पक्षियों के शीतकालीन जीवन-रक्षा के पीछे का विज्ञान

डॉ. विजय गर्ग

जब सर्दियों का मौसम आता है और तापमान शून्य डिग्री से नीचे चला जाता है, तो मनुष्य स्वयं को ठंड से बचाने के लिए गर्म कपड़ों, हीटरों और कंबलों का सहारा लेते हैं। लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि पक्षी खुले आसमान के नीचे, पेड़ों की शाखाओं पर या इमारतों की छतों पर बैठकर कड़ाके की ठंड में रात कैसे बिताते हैं? उनके पास न तो गर्म कपड़े होते हैं और न हीटर, फिर भी वे ठिठुरती सर्दियों में जीवित रहते हैं। इसका रहस्य प्रकृति द्वारा उन्हें प्रदान की गई अद्भुत जैविक संरचनाओं और विशेष अनुकूलन में छिपा है।



1. पंख: प्रकृति की गर्म जैकेट

पक्षियों के शरीर पर मौजूद पंख उन्हें ठंड से बचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पंखों के बीच हवा की एक परत फँस जाती है, जो शरीर की गर्मी को बाहर निकलने से रोकती है।

ठंड बढ़ने पर पक्षी अपने पंखों को फुला लेते हैं। इससे पंखों के बीच हवा की अतिरिक्त परत बनती है और शरीर गर्म बना रहता है। इस प्रकार उनके पंख प्राकृतिक ऊनी जैकेट की तरह काम करते हैं।

2. कांपना: शरीर का प्राकृतिक हीटिंग सिस्टम

मनुष्यों की तरह पक्षी भी ठंड लगने पर कांपते हैं। इस दौरान उनकी मांसपेशियाँ तेजी से सिकुड़ती और फैलती हैं, जिससे गर्मी उत्पन्न होती है। यह प्रक्रिया शरीर का आंतरिक तापमान बनाए रखने में मदद करती है। इसके अतिरिक्त, पक्षी अपनी चयापचय प्रक्रिया के माध्यम से भोजन को ऊर्जा में बदलकर शरीर को गर्म रखते हैं।

3. पैरों में रक्त संचार की विशेष व्यवस्था

क्या आपने कभी सोचा है कि पक्षी बर्फीली शाखाओं या ठंडे पानी में खड़े रहने के बावजूद अपने शरीर की गर्मी कैसे बचाते हैं?

अनेक पक्षियों के पैरों में ताप विनिमय की एक विशेष व्यवस्था होती है, जिसे काउंटरकरंट हीट एक्सचेंज कहा जाता है।

इस प्रणाली में शरीर से पैरों की ओर जाने वाला गर्म रक्त वापस शरीर की ओर आने वाले ठंडे रक्त को गर्म करता है। इससे पैरों का तापमान अपेक्षाकृत कम रहता है और शरीर से गर्मी का नुकसान घट जाता है।

यह विशेष अनुकूलन बत्तखों, हंसों और अन्य जलपक्षियों को ठंडे वातावरण में जीवित रहने में मदद करता है।

4. सोने के लिए सुरक्षित स्थानों का चुनाव

पक्षी सर्दियों में सोने के लिए सुरक्षित स्थान चुनने में विशेष सावधानी बरतते हैं। वे घनी झाड़ियों, पेड़ों के खोखले तनों, मोटी शाखाओं और इमारतों के सुरक्षित कोनों में आश्रय लेते हैं।

कुछ पक्षी एक-दूसरे के पास बैठकर गर्मी साझा करते हैं। कई पक्षी तेज हवाओं और बारिश से सुरक्षित स्थानों पर रात बिताते हैं। इस प्रकार उनका व्यवहार भी उन्हें ठंड से बचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

5. अधिक भोजन से शरीर में गर्मी पैदा करना

सर्दियों में पक्षियों के जीवित रहने के लिए भोजन बहुत आवश्यक है। शरीर का तापमान बनाए रखने के लिए उन्हें अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

सूर्यास्त से पहले पक्षी बीज, अनाज, कीड़े-मकोड़े, फल और अन्य खाद्य पदार्थ खोजते हैं। उनका शरीर भोजन को ऊर्जा में बदलता है, जिससे गर्मी पैदा होती है।

इसी कारण सर्दियों में पक्षियों के लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

6. टॉरपोर: ऊर्जा बचाने की अद्भुत तकनीक

कुछ छोटे पक्षी अत्यधिक ठंड से बचने के लिए टॉरपोर नामक जैविक प्रक्रिया अपनाते हैं। इस अवस्था में उनके शरीर का तापमान, हृदय गति और चयापचय की दर अस्थायी रूप से कम हो जाती है।

इससे ऊर्जा की खपत घट जाती है और भोजन की कमी या अत्यधिक ठंड के दौरान उन्हें जीवित रहने में मदद मिलती है।

हमिंगबर्ड इस प्रक्रिया का प्रसिद्ध उदाहरण हैं। कुछ अन्य छोटी पक्षी प्रजातियाँ भी ठंडी रातों में इस तकनीक का उपयोग करती हैं।

7. अलग-अलग पक्षियों की विशेष जीवन-रक्षा प्रणालियाँ

सभी पक्षी सर्दियों में एक ही तरीके से अपना बचाव नहीं करते।

- पेंगुइन: इनके घने पंख और त्वचा के नीचे जमा वसा की मोटी परत इन्हें अत्यधिक ठंड से बचाती है। कई प्रजातियाँ गर्मी बनाए रखने के लिए समूह में एक-दूसरे के पास खड़ी होती हैं।

- बत्तखें: इनके जलरोधी पंख और पैरों में विशेष रक्त संचार प्रणाली इन्हें ठंडे पानी में जीवित रहने में मदद करती है।

- छोटे गाने वाले पक्षी: ये अपने पंख फुलाते हैं, ऊर्जा से भरपूर भोजन खाते हैं और सुरक्षित स्थानों पर सोते हैं।

- हंस: इनके पंखों की इन्सुलेशन क्षमता और शरीर में मौजूद वसा इन्हें कम तापमान से बचाती है।

ये उदाहरण पक्षियों की अद्भुत जैविक विविधता और प्राकृतिक अनुकूलन क्षमता को दर्शाते हैं।

8. प्रवास: अत्यधिक ठंड से बचने का प्राकृतिक उपाय

कुछ पक्षी सर्दियों में अत्यधिक ठंड वाले क्षेत्रों में रहने के बजाय गर्म स्थानों की ओर चले जाते हैं। इस प्रक्रिया को प्रवास कहते हैं।

हर साल लाखों प्रवासी पक्षी हजारों किलोमीटर की यात्रा करके एक देश या महाद्वीप से दूसरे क्षेत्र में पहुँचते हैं। उनकी यात्रा पर दिन की लंबाई, मौसम में बदलाव, भोजन की उपलब्धता और शरीर की आंतरिक जैविक घड़ी जैसे कारकों का प्रभाव पड़ता है।

भारत में भी सर्दियों के दौरान साइबेरिया और मध्य एशिया के अनेक प्रवासी पक्षी आते हैं। पंजाब की हरिके झील जैसे आर्द्रभूमि क्षेत्र इन पक्षियों के लिए महत्त्वपूर्ण शीतकालीन आश्रय स्थल हैं।

9. हम सर्दियों में पक्षियों की सहायता कैसे कर सकते हैं?

मनुष्य भी ठंड के मौसम में पक्षियों की सुरक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

1. सुरक्षित स्थान पर साफ पीने का पानी रखें।

3. देशी पेड़-पौधे और झाड़ियाँ लगाएँ, ताकि पक्षियों को आश्रय मिल सके।

4. पेड़ों की अनावश्यक कटाई और पक्षियों के घोंसलों को नुकसान पहुँचाने से बचें।

5. पक्षियों के दाना-पानी रखने वाले बर्तनों की नियमित सफाई करें।

6. कीटनाशकों और हानिकारक रसायनों का अनावश्यक उपयोग न करें। हमारे छोटे-छोटे प्रयास भी सर्दियों में पक्षियों के जीवन की रक्षा कर सकते हैं।

प्रकृति: जीवन जीने की अद्भुत पाठशाला

पक्षी इस बात का जीवंत उदाहरण हैं कि विकास की प्रक्रिया ने पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए कितने अद्भुत समाधान विकसित किए हैं। उनके पंख, विशेष रक्त संचार प्रणाली, ऊर्जा बचाने की तकनीकें, भोजन की आदतें और प्रवास की क्षमता प्राकृतिक अनुकूलन की शक्ति को प्रदर्शित करती हैं।

जो कार्य मनुष्य के लिए कठिन प्रतीत होता है, अर्थात् कड़ाके की ठंड में खुले आसमान के नीचे सोना, वह पक्षियों के लिए लाखों वर्षों के प्राकृतिक विकास के कारण संभव हो पाया है।

निष्कर्ष

पक्षी सर्दियों की ठंडी रातों में किसी एक विशेष व्यवस्था के सहारे जीवित नहीं रहते, बल्कि उनका अस्तित्व अनेक जैविक अनुकूलनों, ऊर्जा उत्पादन, विशेष रक्त संचार और व्यवहार संबंधी रणनीतियों के संयुक्त प्रभाव पर निर्भर करता है।

अगली बार जब हम सर्दियों की सुबह किसी छोटे पक्षी को पेड़ की नंगी शाखा पर बैठे देखें, तो हमें याद रखना चाहिए कि उसके शरीर के भीतर प्रकृति का कितना अद्भुत विज्ञान काम कर रहा है।

प्रकृति ने इन जीवों को अपनी रक्षा के लिए विशेष क्षमताएँ प्रदान की हैं। इन क्षमताओं को समझना न केवल हमारे वैज्ञानिक ज्ञान को बढ़ाता है, बल्कि हमें वन्यजीवों की रक्षा और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने की जिम्मेदारी का भी एहसास कराता है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर. मलोट, पंजाब – 152107

आठ साल से बंद शराब निर्माण इकाइयों को फिर खोलने की तैयारी, 12 नवंबर को लॉटरी

नशामुक्त भारत के अभियान के बीच सरकार के फैसले पर सियासी विरोध तेज, शराब कारोबार के कथित एकाधिकार और प्रशासनिक चुप्पी पर उठे गंभीर सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव
परिवहन विशेष समाचार पत्र
राउरकेला



देशभर में नशामुक्त भारत अभियान को लेकर जागरूकता और जनभागीदारी की बातें हो रही हैं, वहीं दूसरी ओर राउरकेला आबकारी जिले में आठ वर्षों से बंद पड़ी तीन देशी शराब निर्माण इकाइयों को दोबारा चालू करने की प्रशासनिक तैयारी ने एक नया विवाद खड़ा कर दिया है। इन इकाइयों के आवंटन के लिए आगामी 12 नवंबर को राउरकेला नगर निगम के काउंसिल हॉल में लॉटरी आयोजित किए जाने की अधिसूचना जारी की गई है। इसके तहत शराब निर्माण के साथ खुदरा बिक्री के अधिकार भी आवंटित किए जाएंगे।

सरकार के इस प्रस्ताव का विरोध अब राजनीतिक सीमाओं से बाहर निकलकर जनचर्चा का विषय बनता जा रहा है। सत्तारूढ़ भाजपा के रघुनाथपाली विधायक ने नशे को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों पर आपत्ति जताते हुए निर्णय वापस लेने की मांग की है। बीजद के राउरकेला विधायक ने आंदोलन की चेतावनी दी है, जबकि माकपा विधायक ने भी प्रस्ताव का विरोध किया है।

लेकिन इस पूरे प्रकरण का एक दूसरा और अधिक गंभीर पहलू भी है। जिले में मदिरा निर्माण एवं वितरण के कारोबार पर कुछ चुनिंदा लोगों के प्रभाव और कथित एकाधिकार को लेकर लगातार सवाल उठ रहे हैं। बिरमित्रपुर से लेकर कोड़ा क्षेत्र तक संचालित शराब निर्माण केंद्रों की लाइसेंसिंग, स्वामित्व, संचालन और अन्य संबंधित दस्तावेजों की निष्पक्ष जांच की मांग जिला स्तर से लेकर ब्लॉक, पंचायत और गांवों तक उठने की चर्चा है। बावजूद इसके, प्रशासनिक स्तर पर ठोस कार्रवाई दिखाई नहीं देना कई संदेहों को जन्म दे रहा है।

आखिर क्या कारण है कि जनसरोकार से जुड़े इन सवालों पर संबंधित विभाग की सक्रियता नजर नहीं आती? क्या शराब कारोबार के संचालन और प्रशासनिक व्यवस्था के बीच कोई ऐसी मधुर सांठगांठ है, जिसकी परतें अभी तक सार्वजनिक नहीं हुई हैं? इन सवालों का जवाब जांच और पारदर्शिता से ही सामने आ सकता है।

स्थिति ऐसी बनती जा रही है कि स्थानीय स्तर पर कुछ शराब कारोबारियों के प्रभाव को लेकर जंगलराज जैसी व्यवस्था स्थापित होने की आशंकाएं व्यक्त की जा रही हैं। यदि आरोपों में सच्चाई है तो यह केवल आबकारी विभाग की जवाबदेही का मामला नहीं, बल्कि कानून-व्यवस्था और शासन की विश्वसनीयता से भी जुड़ा प्रश्न है।

अब सवाल सीधा है—सरकार शराब की नई इकाइयां खोलने से पहले पुरानी इकाइयों के दस्तावेजों, वर्तमान कारोबारियों के लाइसेंस और पूरे आबकारी तंत्र की निष्पक्ष जांच कराने का साहस दिखाएगी या जनता के सवाल फिर फाइलों में दबकर रह जाएंगे?

हाउसिंग बोर्ड की योजनाएं घोषणाओं में दफन, जमीन पर रेत माफिया का कब्जा!



आवासीय परियोजनाओं की एक ईंट तक नहीं रखी गई, सरकारी जमीन पर दिनभर दौड़ रहे रेत से लदे दर्जनों वाहन
पुलिस प्रशासन और राजस्व विभाग की कथित निष्क्रियता पर उठे सवाल, सरकारी खजाने को रोजाना लाखों के राजस्व नुकसान की आशंका

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

ओडिशा हाउसिंग बोर्ड की ओर से राउरकेला में घोषित आवासीय योजनाओं का भविष्य अब सवालों के घेरे में है। घोषणाओं को लंबा समय बीत जाने के बावजूद धरातल पर विकास कार्य की एक ईंट तक नहीं रखी जा सकी है। आवासीय परियोजनाएं कागजों और सरकारी फाइलों में उलझी हुई हैं, वहीं दूसरी ओर हाउसिंग बोर्ड की जमीन का कथित तौर पर खुलेआम व्यावसायिक दुरुपयोग हो रहा है।

सबसे गंभीर मामला हाउसिंग बोर्ड के कार्यालय के समक्ष बोर्ड की जमीन पर चल रहे कथित अवैध व अकूत रेत कारोबार का है। आरोप है कि बोर्ड की जमीन और उसके कार्यालय के सामने दिनभर रेत से लदे दर्जनों वाहन आवाजाही करते हैं। यह कारोबार किसी बाहरी व्यक्ति के बजाय हाउसिंग बोर्ड से जुड़े एक कर्मचारी द्वारा संचालित किए जाने की चर्चा है। आरोप यह भी हैं कि कुछ अधिकारी-कर्मचारियों के जेबों का ख्याल रखते हुए उनकी कथित मिलीभगत अथवा संरक्षण के चलते यह गतिविधि निर्बाध रूप से जारी है।

हैरानी की बात यह है कि इतनी बड़ी गतिविधि के बावजूद स्थानीय पुलिस प्रशासन और राजस्व विभाग की भूमिका प्रभावी कार्रवाई के रूप में सामने नहीं आई है। सवाल है कि आखिर सरकारी जमीन पर इस तरह का कारोबार किसकी अनुमति से चल रहा है? रेत के परिवहन, भंडारण और बिक्री से संबंधित वैध दस्तावेजों की जांच अब तक क्यों नहीं हुई?

यदि यह कारोबार बिना वैध खनन एवं परिवहन अनुमति के संचालित हो रहा है, तो इससे राज्य सरकार को रॉयल्टी और अन्य राजस्व मदों में भारी नुकसान होने की आशंका है। स्थानीय स्तर पर प्रतिदिन लाखों रुपये के राजस्व नुकसान की आशंका भी जताई जा रही है, जिसकी निष्पक्ष जांच आवश्यक है।

विडंबना देखिए, जिस जमीन का उपयोग जनहित में आवासीय योजनाओं के लिए होना चाहिए, वहां सरकारी संपत्ति की निगरानी और संरक्षण पर ही सवाल खड़े हो रहे हैं।

अब आवश्यकता केवल कागजी घोषणाओं की नहीं, बल्कि उच्चस्तरीय जांच, जमीन का सीमांकन, अवैध कारोबार पर तत्काल रोक और संबंधित अधिकारियों-कर्मचारियों की जवाबदेही तय करने की है। जिला प्रशासन, खनन विभाग और हाउसिंग बोर्ड के उच्चाधिकारी बताएं कि आखिर सरकारी जमीन पर यह सब किसके संरक्षण में चल रहा है?

राख परिवहन के कारोबार में खूनी संघर्ष, गोली लगने से सुनील नेटी की मौत

परिवहन विशेष न्यूज

NTPC दर्लीपाली के फ्लाई ऐश परिवहन पर वर्चस्व की लड़ाई ने लिया हिंसक रूप, दो संगठनों के बीच टकराव के बाद चली गोलियां; इलाके में तनाव और भारी पुलिस बल तैनात

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन
विशेष समाचार पत्र सुंदरगढ़

औद्योगिक विकास और रोजगार के अवसरों के लिए पहचाने जाने वाले सुंदरगढ़ जिले में अब राख (फ्लाई ऐश) परिवहन का कारोबार भी हिंसक संघर्ष का केंद्र बनता दिखाई दे रहा है। NTPC दर्लीपाली के ऐश डाइक से राख के परिवहन को लेकर दो संगठनों के बीच लंबे समय से चल रहा विवाद गुरुवार शाम खूनी वारदात में तब्दील हो गया। गोलीबारी में 30 वर्षीय सुनील नेटी की जान चली गई। इस घटना ने पूरे इलाके में सनसनी और भय का माहौल पैदा कर दिया है।

राख परिवहन के कारोबार में वर्चस्व की लड़ाई प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, घटना भस्मा थाना क्षेत्र के बारोबगा गांव में NTPC के दर्लीपाली सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट के फ्लाई ऐश डाइक के निकट हुई। मृतक की पहचान सुनील नेटी के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि राख परिवहन के कारोबार में हिस्सेदारी और संगठनात्मक वर्चस्व को लेकर यूनाइटेड फ्लाई ऐश ट्रांसपोर्ट ओनर्स एसोसिएशन (UFTOA) तथा स्थानीय युवाओं से जुड़े RISE संगठन के बीच विवाद चल रहा था।

गुरुवार शाम करीब 6:30 बजे दोनों पक्षों के बीच कहासुनी ने संघर्ष का रूप ले लिया। इसी दौरान कथित तौर पर गोली चलाई गई, जो सुनील के सीने और सिर में लगी। गंभीर हालत में उसे सुंदरगढ़ मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल ले जाया गया, जहां उसकी मृत्यु हो गई।

कारोबार की प्रतिस्पर्धा या संगठित वर्चस्व का खेल? इस घटना ने औद्योगिक उप-उत्पादों के परिवहन कारोबार की निगरानी व्यवस्था पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। राख जैसी औद्योगिक सामग्री के



परिवहन में स्थानीय ट्रांसपोर्टरों, वाहन मालिकों और संगठनों की भूमिका को लेकर पारदर्शिता आवश्यक है। यदि किसी संगठन द्वारा प्रति वाहन कथित वसूली या कारोबार पर एकाधिकार स्थापित करने की कोशिश की जा रही थी, तो इसकी जांच होनी चाहिए।

सुंदरगढ़ की पुलिस अधीक्षक अमृतपाल कौर के अनुसार, प्रारंभिक जांच में दो समूहों के बीच संघर्ष की बात सामने आई है। पुलिस ने सीमावर्ती निकास मार्गों पर निगरानी बढ़ाई है और आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। घटनास्थल के आसपास के CCTV फुटेज भी जांच के दायरे में हैं। सुंदरगढ़ के विधायक जोगेश सिंह ने भी आरोपियों की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की है।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि औद्योगिक राख के परिवहन जैसे व्यावसायिक मामले में विवाद गोलीबारी और हत्या तक कैसे पहुंच गया? यदि समय रहते विवाद के संकेतों पर प्रभावी कार्रवाई हुई होती, तो शायद एक युवक की जान बचाई जा सकती थी। अब पुलिस के सामने केवल हत्यारों को पकड़ने की चुनौती नहीं, बल्कि इस पूरे कारोबारी विवाद की जड़ तक पहुंचने की जिम्मेदारी भी है।

'यूपी रत्न' डॉ. गोपाल चतुर्वेदी बने श्री हनुमद् आराधन मंडल के मीडिया प्रभारी

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

वृंदावन। अक्रूर स्थित श्री पंचमुखी हनुमान मंदिर में विगत दिवस श्री हनुमद् आराधन मंडल का 15वां वार्षिकोत्सव धूमधाम एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के प्रख्यात साहित्यकार एवं आध्यात्मिक पत्रकार 'यूपी रत्न' डॉ. गोपाल चतुर्वेदी को सर्वसम्मति से श्री हनुमद् आराधन मंडल का मीडिया प्रभारी नियुक्त किया गया।



उनकी नियुक्ति की घोषणा मंडल के मार्गदर्शक डॉ. मनोज मोहन शास्त्री, संस्थापक अशोक व्यास एवं कोषाध्यक्ष विपिन बापू ने की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि डॉ. गोपाल चतुर्वेदी के मीडिया प्रभारी बनने से मंडल की धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों को देशभर में व्यापक प्रचार-प्रसार मिलेगा। ज्ञात हो कि डॉ. गोपाल चतुर्वेदी हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा के सिद्धहस्त लेखक हैं। वे देश की अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े रहे हैं। उनके लेखों का अनुवाद देश की विभिन्न भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं में भी हो चुका है। वे न केवल वृंदावन, बल्कि समूचे देश का गौरव हैं। वे उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में उत्तर प्रदेश शासन से मान्यता प्राप्त पत्रकार भी रह चुके हैं। अपनी साहित्यिक, पत्रकारिता एवं आध्यात्मिक क्षेत्र की विशिष्ट उपलब्धियों के लिए उन्हें उत्तर प्रदेश के पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा के करकमलों से 'यूपी रत्न' की मानद उपाधि से भी अलंकृत किया जा चुका है।

धनतेरस पर राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन कार्यालय में विधिवत पूजा-अर्चना

परिवहन व्यवसाय की समृद्धि, संगठन की मजबूती और व्यापारियों के हितों की कामना; 'सभी को काम, सभी को समान दाम' की फ्री ट्रेड पॉलिसी पर भी हुई चर्चा

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

धनतेरस के शुभ अवसर पर राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के कार्यालय में विधिवत पूजा-अर्चना का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परिवहन व्यवसाय की उन्नति, संगठन की सुदृढ़ता और राउरकेला के व्यापारिक जगत की समृद्धि की कामना के साथ धार्मिक एवं संगठनात्मक वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पूजा-अर्चना में राउरकेला चैंबर ऑफ कॉमर्स एन्ड इंडस्ट्रीज़ के पूर्व अध्यक्ष शुभ पटनायक, स्पंज उद्योग (स्पन्ज आयरन कारखाना) से जुड़े गोलू गांधी जी, चैंबर ऑफ कॉमर्स के वरिष्ठ सदस्य एवं पूर्व उपाध्यक्ष तथा राउरकेला रोड ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन की परामर्शदाता समिति के सदस्य गुरमीत सिंह, एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष, चेयरमेन एवं परामर्शदाता समिति के सदस्य राम मेहेर शर्मा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

इसके अतिरिक्त राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन से जुड़े नंदकिशोर सिंह, मुन्ना राय, रामाज्ञा प्रसाद, चंदन बेहेरा, संजीत सिन्हा, प्रशांत पाणि, बिकास सिँह, गोविंद अग्रवाल, शिवकुमार यादव, गौरीशंकर यादव, रमाशंकर प्रसाद, विकास सिंह, मुनेन्द्र सिंह, राजेश जेथलिया सहित अन्य सदस्यों ने भी सहभागिता निभाई। विधिवत पूजा के उपरांत सभी ने प्रसाद ग्रहण किया और संगठन के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।



परिवहन कारोबार में समान अवसर और पारदर्शिता पर जोर कार्यक्रम के दौरान संगठन की भावी कार्ययोजना और परिवहन व्यवसाय में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को लेकर भी विचार-विमर्श हुआ। विशेष रूप से एसोसिएशन की फ्री ट्रेड पॉलिसी—'सभी को काम, सभी को समान दाम' की अवधारणा को आगे बढ़ाने पर जोर दिया गया। इसका उद्देश्य परिवहन क्षेत्र से जुड़े सभी व्यवसायियों को समान अवसर उपलब्ध कराना और कारोबार में पारदर्शिता एवं संतुलन बनाए रखना है।

उल्लेखनीय है कि राउरकेला और सुंदरगढ़ जिला इस्पात, खनन, स्पंज आयरन तथा औद्योगिक उत्पादन का महत्वपूर्ण केंद्र है। ऐसे औद्योगिक परिदृश्य में माल परिवहन केवल व्यावसायिक गतिविधि नहीं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था, रोजगार, उद्योगों की आपूर्ति श्रृंखला और व्यापारिक गतिशीलता का प्रमुख आधार है।

कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों ने विश्वास व्यक्त किया कि संगठन की एकजुटता, पारदर्शी कार्यप्रणाली और समान व्यापारिक अवसरों की नीति से राउरकेला के परिवहन व्यवसायियों को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा तथा क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, गुड़गांव में फ्रेशर पार्टी - सेलिब्रिटी नाइट 2026 के आयोजन में मशहूर टीवी और बॉलीवुड अभिनेत्री निया शर्मा ने बिखेरा जलवा

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम : बेहतरीन शिक्षा और शानदार प्लेसमेंट के लिए अपनी अलग पहचान बना चुके वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट में फ्रेशर पार्टी - सेलिब्रिटी नाइट 2026 के आयोजन में मशहूर टीवी और बॉलीवुड अभिनेत्री निया शर्मा ने अपनी शानदार परफॉर्मेंस और धमाकेदार एनर्जी से समां बांधा।

वर्ल्ड कॉलेज के रजिस्ट्रार युद्धवीर सिंह लांबा ने जानकारी देते हुए बताया कि फ्रेशर पार्टी - सेलिब्रिटी नाइट 2026 में जैसे ही अभिनेत्री निया शर्मा ने मंच पर कदम रखा, पूरा कैंपस तालियों और सीटियों की गूंज से भर गया, निया शर्मा के जोशीले गानों ने धमाल मचा दिया जिससे सभी को थिरकने पर मजबूर कर दिया, हर कोई मंत्रमुग्ध हो गया जिससे यह इवेंट एक यादगार सेलिब्रेशन बन गया।

वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री कुंवर निशांत सिंह जी ने नए बैच के सभी एम.सी.ए, एम.बी.ए, एम.टेक, बी.टेक, बी.बी.ए, बी.सी.ए और डिप्लोमा के छात्र-छात्राओं को अपनी शुभकामनाएं व भविष्य में सफलता के लिए आशीर्वाद दिया और छात्रों को पूर्ण मनोयोग, लगन, निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

आपको बता दें कि वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक से एफिलिएटेड कॉलेज है और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, भारत सरकार द्वारा अप्रूव्ड कॉलेज हैI

वर्ल्ड कॉलेज में बी.टेक के रोबोटिक्स एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मैकेनिकल और ऑटोमेशन इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस एंड डिजाइन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड डेटा साइंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड मशीन लर्निंग, सिविल इंजीनियरिंग और मैकेनिकल इंजीनियरिंग आदि और एम.टेक के सिविल में कंप्यूटर एडेड स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड डेटा साइंस, सिविल इंजीनियरिंग और मैकेनिकल इंजीनियरिंग आदि मार्केट्स और इंडस्ट्री सेक्टर की डिमांड के अनुसार रोजगारयुक्त नए कोर्सेज का सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है।



टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com,

आज का साइबर सुरक्षा विचार : CERT-In ने AI से संबंधित साइबर सुरक्षा घटनाओं की रिपोर्टिंग 6 घंटे के भीतर अनिवार्य की



पिंकी कुंडू

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के दौर में भारत की साइबर सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (CERT-In) ने 4 नवंबर 2026 को AI Security Auditing Guidelines जारी की हैं। इन दिशानिर्देशों के अनुसार, CERT-In के रिपोर्टिंग मानदंडों के अंतर्गत आने वाली किसी भी AI-संबंधित साइबर सुरक्षा घटना की सूचना उसकी पहचान होने के 6 घंटे के भीतर देना अनिवार्य होगा। यह प्रावधान भारत में AI सिस्टम विकसित करने, उपयोग करने, खरीदने अथवा संचालित करने वाले सरकारी एवं निजी दोनों संस्थानों पर लागू होगा।

इन दिशानिर्देशों में AI गवर्नेंस, साइबर सुरक्षा नियंत्रण, डेटा प्रबंधन, मानवीय निगरानी, घटना प्रतिक्रिया, निरंतर मॉनिटरिंग तथा तृतीय-पक्ष आश्वासन को शामिल करते हुए एक व्यापक जोखिम-आधारित सुरक्षा ऑडिट ढांचा निर्धारित किया गया है।

पृष्ठभूमि

बैंकिंग, स्वास्थ्य सेवाओं, शासन, दूरसंचार, शिक्षा, महत्वपूर्ण अवसंरचना तथा कानून-प्रवर्तन जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में AI का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। स्वायत्त AI एजेंटों और बड़े भाषा मॉडल्स (LLMs) के बढ़ते प्रयोग से अनधिकृत पहुंच, डेटा लीक, मॉडल से छेड़छाड़, AI भ्रम (Hallucinations), पक्षपातपूर्ण निर्णय तथा बिना पर्याप्त निगरानी के स्वचालित निर्णय लेने जैसे साइबर जोखिम भी बढ़े हैं।

इन्हीं उभरते खतरों को ध्यान में रखते हुए CERT-In ने AI प्रणालियों की सुरक्षा तथा उनकी जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए यह राष्ट्रीय मानक ढांचा जारी किया है।

प्रमुख प्रावधान

1. AI सुरक्षा घटनाओं की अनिवार्य रिपोर्टिंग

दिशानिर्देशों का सबसे महत्वपूर्ण प्रावधान है:

"CERT-In के रिपोर्टिंग मानदंडों के अंतर्गत आने वाली AI घटनाओं की सूचना 6 घंटे के भीतर देना अनिवार्य होगी।"

इससे AI आधारित प्रणालियों को भी CERT-In के मौजूदा साइबर घटना रिपोर्टिंग ढांचे के अंतर्गत लाया गया है। किसी भी पात्र AI-संबंधित साइबर घटना का पता चलते ही संस्थानों को तुरंत CERT-In को सूचित करना होगा।

कानून-प्रवर्तन एवं साइबर अपराध जांच के लिए महत्व

इन दिशानिर्देशों से कानून-प्रवर्तन एजेंसियों को निम्न लाभ प्राप्त होंगे:

- AI-सक्षम साइबर घटनाओं की त्वरित रिपोर्टिंग।
- डिजिटल साक्ष्यों की बेहतर उपलब्धता।
- लॉगिंग आवश्यकताओं के माध्यम से बेहतर एट्रीब्यूशन (अपराधी की पहचान)।
- AI डेवलपर्स एवं ऑपरेटर्स की बढ़ी हुई जवाबदेही।
- साइबर घटनाओं की जांच और प्रतिक्रिया के दौरान संस्थानों एवं CERT-In के बीच बेहतर समन्वय।



लॉग संरक्षण एवं फॉरेंसिक तैयारी

संस्थानों को निम्नलिखित सुनिश्चित करना होगा:

- न्यूनतम 180 दिनों तक सुरक्षा लॉग का संरक्षण।
- सभी AI घटकों में समय (Time Synchronization) का समन्वय।
- ऑडिट ट्रेल एवं फॉरेंसिक रिकॉर्ड का संरक्षण।

ये प्रावधान साइबर घटनाओं की जांच, मूल कारणों के विश्लेषण तथा डिजिटल साक्ष्य संरक्षण को मजबूत बनाएंगे।

संस्थानों के लिए अनुपालन आवश्यकताएं

AI प्रणाली का उपयोग करने वाले संगठनों को:

- AI गवर्नेंस व्यवस्था स्थापित करनी होगी।
- AI प्रणालियों का जोखिम-आधारित वर्गीकरण करना होगा।
- समय-समय पर स्वतंत्र सुरक्षा ऑडिट कराना होगा।
- AI-विशिष्ट घटना प्रतिक्रिया योजना विकसित करनी होगी।
- लॉगिंग एवं मॉनिटरिंग क्षमताओं को मजबूत करना होगा।
- त्वरित रिपोर्टिंग तंत्र स्थापित करना होगा।
- तृतीय-पक्ष AI जोखिमों का प्रबंधन करना होगा।
- निरंतर सुरक्षा परीक्षण एवं वैधीकरण (Validation) सुनिश्चित करना होगा।

CERT-In की AI Security Auditing Guidelines भारत में AI प्रणालियों के लिए अब तक का सबसे व्यापक साइबर सुरक्षा ढांचा प्रस्तुत करती हैं। छह घंटे की अनिवार्य रिपोर्टिंग, जोखिम-आधारित वर्गीकरण, स्वतंत्र ऑडिट, 180-दिवसीय लॉग संरक्षण तथा जवाबदेही पर बल देकर यह ढांचा सुनिश्चित करता है कि AI नवाचार मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों के साथ आगे बढ़े। साथ ही, यह AI-संचालित धोखाधड़ी, डीपफेक अपराध, स्वायत्त मैलवेयर, AI आधारित सोशल इंजीनियरिंग हमले, डेटा उल्लंघन और महत्वपूर्ण अवसंरचना से जुड़े साइबर अपराधों की जांच को भी अधिक प्रभावी बनाएगा।

पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा का कारकेड वाहन दुर्घटनाग्रस्त

अपने गृह जिला सरायकेला एन एच 33 (चौका) की घटना ,कोई हताहत नहीं

कार्तिक कुमार परिच्छा,स्टेट हेड - झारखंड



सरायकेला, मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा की गाड़ी दुर्घटना घटना ने सभी को सकते में डाल दिया है। सरायकेला-खरसावां जिले के चौका थाना क्षेत्र अंतर्गत NH-33 पर चौलीबासा के समीप शुक्रवार देर शाम यह गंभीर सड़क हादसा हुआ। पूर्व मुख्यमंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता अर्जुन मुंडा जब रांची से अपने गंतव्य की ओर लौट रहे थे, उसी समय उनके सुरक्षा काफिले (कारकेड) में शामिल जैमर वाहन का संतुलन बिगड़ने से यह दुर्घटना हुई।

घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय प्रशासन और चौका थाना पुलिस में हड़कंप मच गया। आनन-फानन में पुलिस बल मौके पर पहुंचा। राहत की बात यह रही कि इस दुर्घटना में किसी के भी हताहत होने की कोई सूचना नहीं है। वाहन में सवार सभी सुरक्षाकर्मी पूरी तरह सुरक्षित बताए जा रहे हैं, हालांकि दुर्घटना के बाद वाहन पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया है। घटना के तुरंत बाद घटनास्थल पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया था। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल बचाव कार्य शुरू किया और क्षतिग्रस्त जैमर वाहन को सड़क से हटवाया।

पुलिस अधीक्षक के अनुसार, फिलहाल दुर्घटना के वास्तविक कारणों का स्पष्ट पता नहीं चल पाया है। क्या यह तकनीकी खराबी थी, टायर फटने से हुआ हादसा था या चालक की कोई चूक—इन सभी बिंदुओं पर पुलिस बारीकी से जांच कर रही है।

सरायकेला-खरसावां क्षेत्र में NH-33 पर आए दिन होने वाली दुर्घटनाएं चिंता का विषय बनी हुई हैं। इस बार पूर्व मुख्यमंत्री का काफिला होने के कारण मामला अधिक संवेदनशील हो गया है। अर्जुन मुंडा के सुरक्षा घेरे में जैमर वाहन का होना एक अनिवार्य प्रोटोकॉल है, और इस वाहन के दुर्घटनाग्रस्त होने से सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा भी की जा सकती है।

इस हादसे में किसी की जान न जाना एक दैवीय चमत्कार माना जा रहा है। अर्जुन मुंडा के समर्थकों ने इस खबर के मिलते ही उनके सुरक्षित होने की पुष्टि के बाद राहत की सांस ली है। पुलिस ने आगे की विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है और वाहन की फॉरेंसिक जांच भी करवाई जा सकती है ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

घटना के समय वहां मौजूद पुलिस अधिकारियों ने बताया कि वाहन में मौजूद सभी सुरक्षाकर्मियों को मामूली चोटें भी नहीं हैं। सभी लोग सुरक्षित हैं, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया। फिलहाल, चौका पुलिस मामले में प्राथमिकी दर्ज करने की प्रक्रिया में है।

जमशेदपुर के भाजपा नेता निर्भय सिंह अब नहीं रहे, हार्ट अटैक से निधन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड



जमशेदपुर, 6 नवंबर : जमशेदपुर के हिंदूवादी नेता ठाकुर प्यारा सिंह के पोते तथा ठाकुर धुरंधर सिंह के पुत्र निर्भय सिंह का आज टाटा मुख्य अस्पताल में असामयिक निधन हो गया। वे भाजपा प्रदेश प्रवक्ता अभय सिंह के भाई थे अभय सिंह मामूली कार्यकर्ता से भाजपा के प्रदेश स्तर के नेता बने। उनकी सफलता में उनके जुड़वा भाई निर्भय सिंह का पर्दे के पीछे से बहुत बड़ा रोल था। सर जमीन पर उतर कर वे अपने बड़े भाई अभय सिंह के लिए काम करते थे। और उनके लिए राजनीतिक जमीन बनाते थे। निर्भय सिंह अभय सिंह के जुड़वा भाई थे। उनकी मौत का कारण अचानक हुआ हार्ट अटैक बताया जाता है।

इस अचानक हुए हादसे के बाद भाजपा नेता अभय सिंह और उनके पूरे परिवार का रो-रोकर बुरा हाल है। सोशल मीडिया और स्थानीय खबरों के माध्यम से लोग इस दुखद घड़ी में परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त कर रहे हैं।

निर्भय सिंह का पार्थिव शरीर वर्तमान में परिजनों और समर्थकों के अंतिम दर्शन के लिए उनके जमशेदपुर स्थित आवास (काशिडीह क्षेत्र) पर रखा जा रहा है, जहाँ सुबह से ही लोगों की भारी भीड़ उमड़ रही है।

उनकी अंतिम यात्रा उनके पैतृक निवास से होते हुए जमशेदपुर के भुइयांडीह घाट के लिए रवाना होगी, जहाँ पूरे रीति-रिवाज के साथ उनका अंतिम संस्कार संपन्न किया जाएगा।

अचानक हुए इस दुखद हादसे के बाद जमशेदपुर और पूरे झारखंड के राजनीतिक व सामाजिक जगत में शोक की लहर है।

भाजपा के वरिष्ठ नेताओं की संवेदना

झारखंड भाजपा के शीर्ष नेतृत्व, पूर्व मुख्यमंत्रियों और स्थानीय विधायकों ने अभय सिंह से फोन पर बात कर ढांढस बंधाया है। नेताओं ने कहा कि ₹निर्भय सिंह एक बेहद मिलनसार और सामाजिक व्यक्ति थे। उनका असमय चले जाना सिंह परिवार के साथ-साथ संगठन के लिए भी एक व्यक्तिगत क्षति है।₹

सिंह परिवार के जमशेदपुर में गहरे प्रभाव के कारण, भाजपा के साथ-साथ विपक्षी दलों के नेता (झामुमो, कांग्रेस) और विभिन्न सामाजिक धार्मिक संस्थाओं के प्रमुख नेता भी सांत्वना देने अभय सिंह के आवास पर पहुंच रहे हैं। सोशल मीडिया पर समर्थकों द्वारा दुख व्यक्त करते हुए 'ओम शांति' और परिवार को इस कठिन समय को सहने की शक्ति देने की प्रार्थनाएं की जा रही हैं।

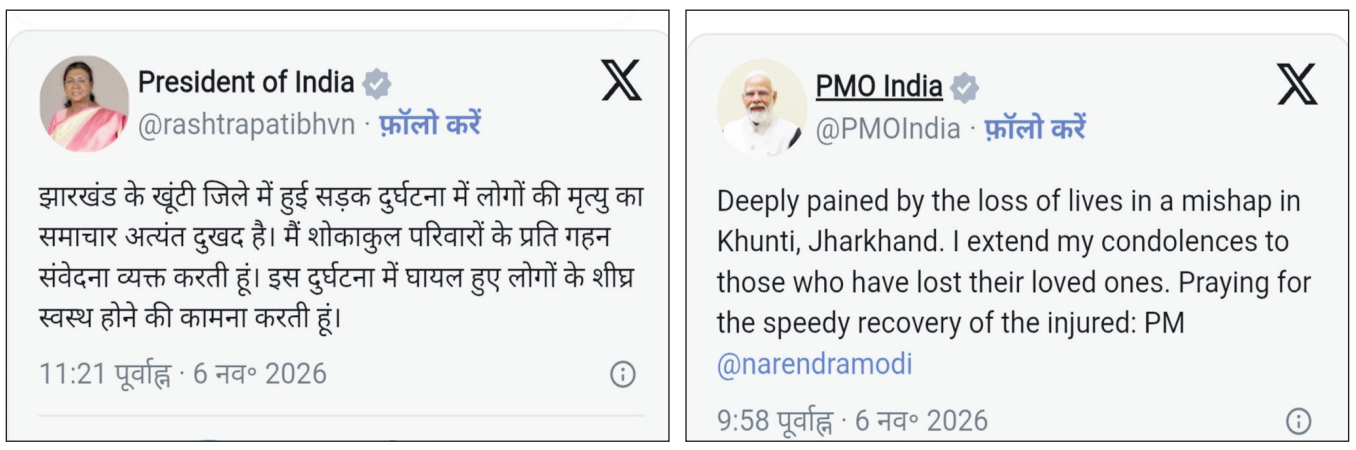
शवयात्रा और अंतिम संस्कार: परिजनों के अनुसार, उनकी अंतिम शवयात्रा निकाली जाएगी। यह शवयात्रा साकची के मुख्य मार्गों से होते हुए सुवर्णरेखा घाट (भुइयांडीह) पहुंचेगी, जहाँ हिंदू रीति-रिवाज के साथ उनका अंतिम संस्कार (दाह संस्कार) किया जाएगा।

भाजपा संगठन के नेता: भाजपा जमशेदपुर महानगर के अध्यक्ष, कई पूर्व जिला अध्यक्ष और संगठन से जुड़े पदाधिकारी (जैसे साकची और मानगो क्षेत्र के स्थानीय भाजपा कार्यकर्ता) सुबह से ही डटे हुए हैं।

सिंह परिवार के गहरे राजनैतिक और सामाजिक रसूख के कारण, झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी के करीबी नेताओं, पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन के समर्थकों और सिंहभूम व जमशेदपुर क्षेत्र के स्थानीय विधायकों व पूर्व मंत्रियों ने भी शोक व्यक्त किया है और उनके साकची कार्यालय व आवास पर पहुंच रहे हैं।

सामाजिक और धार्मिक संस्थाएं: चूंकि अभय सिंह जमशेदपुर में रामनवमी और केंद्रीय दुर्गा पूजा समितियों से काफी गहराई से जुड़े रहे हैं, इसलिए, शहर के अखाड़ा समितियों के संचालक, धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधि और सामाजिक कार्यकर्ता भी निर्भय सिंह को श्रद्धांजलि देने भारी संख्या में काशिडीह पहुंच रहे हैं।

खूंटी में भयंकर सड़क दुर्घटना तीन बच्चे समेत सात की मौत



राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री ने भी जताया शोक, दुशरू दिन खूंटी से लौटने के क्रम में अर्जुन मुंडा के काफिले की गाड़ी दुर्घटना ग्रस्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड के खूंटी जिले में गुरुवार की रात एक भीषण सड़क हादसे में चार महिलाओं और तीन बच्चों समेत सात लोगों की दर्दनाक मौत हो गई. कर्रा थाना क्षेत्र के कोशांबी कॉलोनी के पास एक तेज रफ्तार अनियंत्रित 18 चक्का ट्रेलर ने सड़क किनारे खड़े लोगों को अपनी चपेट में ले लिया.उधर शुक्रवार को खूंटी से जमशेदपुर लौटने के क्रम में पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा की काफिले की गाड़ी दुर्घटना ग्रस्त हो गयी ।

हादसे में दो अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए. घटना के बाद इलाके में चीख-पुकार मच गई. सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल पहुंचाया

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, गुरुवार रात करीब 10:15 बजे एक स्कूटी सवार अनियंत्रित होकर सड़क किनारे झाड़ियों में गिर गया था. उसकी मदद के लिए आसपास के ग्रामीण अपने घरों से बाहर निकल आए.

कुछ युवक झाड़ियों में फंसे स्कूटी सवार को निकालने की कोशिश कर रहे थे, जबकि महिलाएं और बच्चे सड़क किनारे खड़े होकर घटनाक्रम देख रहे थे. इसी दौरान तोरपा की ओर से तेज रफ्तार में आ रहे 18 चक्का ट्रेलर ने वहां मौजूद लोगों को रौंद दिया. अचानक हुए इस हादसे में किसी को संभलने तक का मौका नहीं मिल

इस दुर्घटना में स्थानीय निवासी बिरसा नायक के परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा. हादसे में उनकी पत्नी कसीला देवी, बेटी अंजलि कुमारी और एक वर्षीय नाती सौरभ नायक की मौत हो गई. मृतकों की पहचान कसीला देवी, मान्दू देवी, अंजलि कुमारी, पाको देवी, तूती कुमारी, गोलू कुमार और मासूम सौरभ नायक के रूप में हुई है. हादसे में दो अन्य लोग घायल हुए हैं. उन्हें तत्काल खूंटी सदर अस्पताल और तोरपा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया.

वहीं सड़क हादसे में सात लोगों की मौत के विरोध और मुआवजे की मांग को लेकर कर्रा रेलवे फाटक के पास लोगों ने सड़क जाम कर दिया है.

घटना की जानकारी मिलते ही खूंटी एसपी ऋषभ गर्ग देर रात अस्पताल पहुंचे और घायलों के इलाज की जानकारी ली. एसपी ने घटना को बेहद दुखद और हृदयविदारक बताया. उन्होंने कहा कि कर्रा थाना क्षेत्र में रेलवे फाटक के पास स्कूटी दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद लोग मदद के लिए पहुंचे थे. घटनास्थल पर तीखा मोड़ और अंधेरा होने के कारण 18 चक्का वाहन के चालक को सड़क किनारे मौजूद लोग नजर नहीं आए और यह भीषण दुर्घटना हो गई.

एसपी के मुताबिक, हादसे में अब तक सात लोगों की मौत हुई है. घायल बच्ची खतरे से बाहर है. दुर्घटना के बाद ट्रेलर का चालक और खलासी मौके से फरार हो गए. पुलिस उनकी गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी कर रही है. पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त ट्रेलर को जब्त कर लिया है. वहीं, मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है.



स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023